www.ghoonghatkibagawat | www.ghoonghatkibagawat | ghoonghatkibagawat37@gmail.com

घूँघट की बगावत

UP/HIN/1999/1282

प्रत्येक रविवार को प्रकाशित

हिन्दी साप्ताहिक समाचार पत्र

वर्ष : 25 अंक : 17 | गोरखपुर, 19 अक्टूबर 2025 रविवार | पृष्ठ : 6 | मूल्य : 2

शुभकामना संदेश

प्रिय पाठकों, संवाददाताओं, स्वतंत्र रचनाकारों एवं शुभेच्छुओं। आप सभी को षष्ठ दिवसीय दीपावली महापर्व की हार्दिक शुभकामनाएं। दीपावली का पर्व आप सभी के जीवन मार्ग में एक नवीनतम रोशनी लेकर आए। इन्हीं शुभकामनाओं के साथ शुभ दीपावली।

संपादक

धनतेरस पर दिल्ली-एनसीआर में ट्रैफिक का महाजाम, घंटों फंसे लोग बेहाल, सड़कें पैक

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी और देश के बाकी हिस्सों में धनतेरस के त्यौहार के दौरान शनिवार को दिल्ली-एनसीआर क्षेत्र की सड़कों पर भारी यातायात जाम देखा जा रहा है। सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे दृश्यों के अनुसार, दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेसवे पर भारी यातायात देखा जा रहा है। दृश्यों में दक्षिण दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम के पास भारी यातायात भी दिखाया गया, जहां यात्रियों ने त्योहारी सीजन के दौरान योजना की कमी के कारण अपनी निराशा व्यक्त की। धनतेरस के मौके पर आभूषण बाजारों में भारी भीड़ देखी जा रही है, जब लोग दिवाली से पहले समृद्धि के प्रतीक के रूप में कीमती धातुएँ खरीदते हैं। कोटला मुबारकपुर जैसी जगहों पर दुकानें ग्राहकों से खचाखच भरी दिखीं, और शाम ढलते ही और भी ज्यादा ग्राहकों के आने की उम्मीद थी। दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन (डीएमआरसी) ने शनिवार को घोषणा की कि दिवाली की पूर्व संध्या पर रविवार को दिल्ली मेट्रो ट्रेनें विस्तारित समय पर चलेंगी।

रविवार को समय विस्तार पिंक, मैजेंटा और ग्रे लाइनों पर लागू होगा, जिससे ट्रेनें सामान्य से पहले चलेंगी। डीएमआरसी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर एक पोस्ट में लिखा, ₹दिवाली की पूर्व संध्या (19.10) पर पिंक, मैजेंटा और ग्रे लाइनों पर मेट्रो ट्रेन सेवाएँ, जो आमतौर पर रविवार को सुबह 7:00 बजे शुरू होती हैं, अब सुबह 6:00 बजे शुरू होंगी। सोमवार (20.10) को, दिवाली के त्योहार के कारण, 20 अक्टूबर, 2025 (सोमवार) को आखिरी मेट्रो ट्रेन सेवा एयरपोर्ट एक्सप्रेस लाइन सहित सभी लाइनों के टर्मिनल स्टेशनों से रात 10:00 बजे शुरू होगी। दिवाली के दिन बाकी दिन सभी लाइनों पर मेट्रो ट्रेन सेवाएँ अपने नियमित समय से सामान्य रूप से चलेंगी।

अवकाश सूचना

प्रिय पाठकों एवं शुभचिंतकों,

नरक चतुर्दशी, दीपावली, भैयादूज, छठ महापर्व के उपलक्ष में धूंघट की बगावत कार्यालय हिन्दी साप्ताहिक समाचार पत्र का कार्यालय में दिनांक 26 अक्टूबर, 2025 को अवकाश रहेगा। अतः अगला अंक 02 नवम्बर, 2025 को आपकी सेवा में पुनःप्रस्तुत होगा।

प्रबंधक

छः दिवसीय 16वें पुस्तक मेला का हुआ समापन

अयोध्या। अयोध्या धाम शहर में चल रहे 16वें पुस्तक मेला के समापन दिवस के अवसर पर मुख्य अतिथि अयोध्या जिला जज रणंजय वर्मा ने बतौर मुख्य अतिथि ने मेला स्मृति के प्रतीक पूर्ण स्वतंत्रता सेनानी हुआ एडवोकेट स्वर्गीय बाबू नारायण दास खत्री को नमन करते हुए कहा कि हमें अयोध्या की सरहदों से क्या मतलब, उनका पैगाम तो विद्या, इंसानियत, करूणा रही तभी यहां तक पहुंचे बाबूजी उपस्थित साहित्य प्रेमियों एवं आयोजकों को संबोधित करते हुए कहा कि ऐसे आयोजन होते रहने चाहिए जिससे मनुष्य को जीवन में साहित्य के माध्यम से बहुत कुछ सीखने को मिलता है साहित्य और शिक्षा के बल पर ही मनुष्य अपने को श्रेष्ठतम बना सकता है, अपनी मधुर आवाज में समां बांधते हुए कहा कि जलाओ दिए पर रहे ध्यान इतना, अंधेरा धरा पर कहीं रह न जाए।

जिला जज श्री बर्मा ने कहा कि संस्थागत दौर में किताबों से बड़ी कोई चीज नहीं, अभिमान, अहंकार, अभाव, अज्ञानता व निर्धनता ज्ञान से ही मिटाया जा सकता है, अयोध्या की पावन धरती से अंधकार मिटाने का जो कार्य नारायण दास खत्री मेमोरियल ट्रस्ट जो कर रहा है किसी तीर्थ से कम नहीं विराट व्यक्तित्व का व्यक्ति पुस्तकों के माध्यम से कैसे अमर हो सकता है ये नारायण दास खत्री की जीवंतता है जिससे लोग देख समझ सकते हैं, आने वाली सदियों में अयोध्या की धरा पुस्तक मेला माध्यम से भारत पटल पर होगा, उनकी शिक्षा के प्रति प्रतिबद्धता, अमरता याद की जाएगी, ज्ञान के प्रसार में पुस्तक से बढ़कर कोई दोस्त नहीं कोई आधार नहीं।

पूर्ण स्वतंत्रता सेनानी एडवोकेट व साहित्य प्रेमी रहे स्वर्गीय नारायण दास खत्री के लिए जिला जज ने कहा उनकी स्मृति में ऐसे आयोजन करके जनपद तथा दूर दराज के क्षेत्र के लोगों और साहित्य प्रेमियों को शिक्षा के महत्व का एक सार्थक संदेश देना इस कार्यक्रम की सबसे बड़ी उपलब्धि है, इस मौके पर जिला जज श्री

बर्मा ने कई दिनों तक शिक्षा साहित्य के अलख जलाए रखने के लिए पुस्तक मेला सचिव व पूर्व सांसद डॉक्टर निर्मल खत्री की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए कहा कि समाज को उसकी मातृभाषा से जुड़े रहने के लिए ऐसे आयोजन से शिक्षा की गुणवत्ता एवं वर्तमान परिदृश्य के विश्व पटल पर क्या चल रहा है पुस्तक मेला जैसे इन आयोजनों से जानने समझने पढ़ने का अवसर मिलता है, जिससे बौद्धिक विकास के साथ-साथ एक स्वस्थ समाज में कैसे बिना हिंसा नफरत से दूर रहकर आपसी सद्भाव एकता कायम रखी जाए सीखने को मिलता है।

पुस्तक मेला समापन के अवसर पर बतौर विशिष्ट अतिथि अयोध्या के पूर्व महापौर ऋषिकेश उपाध्याय ने 6 दिवसीय पुस्तक मेला में विविध कार्यक्रमों में प्रतिभागी रहे छात्र-छात्राओं को पुरस्कार वितरण किया तथा उपस्थित साहित्य प्रेमियों व प्रतिभागी छात्र-छात्राओं को प्रमुख रूप से संबोधित करते हुए कहा कि आप लोगों के लिए शिक्षण के इस कल में सबसे जरूरी कर्तव्य यही है कि अपनी शिक्षा को श्रेष्ठतम पायदान पर ले जाकर अपना, अपने माता-पिता क्षेत्र तथा राष्ट्र का नाम रोशन करके अपने जीवन को सार्थक बनाने का यह स्वर्णिम समय आपके सामने है, ऐसे साहित्यिक आयोजनों से आप अपनी क्लास में जो पढ़ाया जाता है उसके बाहर की भी दुनिया में क्या चल रहा है,किताबों से क्या सीखा जा सकता है आप ऐसे पुस्तक मेले में पहुंचकर अपनी जिज्ञासाओं को जान समझ कर शांत कर सकते हैं और पसंदीदा विषयों पर आधारित साहित्य को पढ़कर अपने ज्ञान में वृद्धि करने का शुभ अवसर प्राप्त होता है।

समापन संध्या पर इस साहित्यक ज्ञान परिसर में भी प्रख्यात टीवी पत्रकार व साहित्यकार ह्लआलोकनामा कार्यक्रमह्व के प्रमुख आलोक श्रीवास्तव ने मयार्दा पुरुषोत्तम श्रीराम के आदर्श उनसे जुड़े वृतांत की विस्तृत चर्चा करते हुए हम सभी लोगों को प्रभु श्री राम के आदर्शों पर चलकर अपना जीवन सार्थक बनाना चाहिए। आलोकनामा कार्यक्रम की प्रस्तुति में साहित्यकार आलोक श्रीवास्तव ने बॉलीवुड अभिनेता जो कि साहित्य के प्रेमी खुद कई साहित्यिक रचनाओं को अंतिम रूप दे चुके अभिनेता आशुतोष राणा के बारे में उनके जीवन से जुड़े कई पहलुओं पर विस्तार से चर्चा करते हुए कहा कि मनुष्य के उत्थान में शिक्षा साहित्य व कर्म ही विशेष भूमिका निभाते हैं जिसमें सर्वश्रेष्ठ पायदान पर शिक्षा ही है शिक्षा आपको सर्वगुण संपन्न बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

टीवी पत्रकार व साहित्यकार आलोक श्रीवास्तव ने ऐसे भव्य कार्यक्रम करने के लिए जो कि साहित्य प्रेमियों के लिए एक वरदान साबित हो रहा है पुस्तक मेला के सचिव डॉक्टर निर्मल खत्री की विशेष सराहना करते हुए कहा कि जो व्यक्ति खुद साहित्य में रुचि रखता हो, वह समाज को उत्थान के क्षेत्र में देखना चाहता है, वह सर्वप्रथम शिक्षा के महत्व को विशेष स्थान देता है, और शिक्षण संस्थानों को खुलवाकर ऐसे साहित्य मेला का आयोजन करके क्षेत्र वासियों को जनपद वासियों को प्रदेशवासियों को सुअवसर प्रदान करता है कि वह शिक्षा के माध्यम से अपना सर्वांगीण विकास कर सके।

समापन संध्या के मौके पर मेला सचिव डॉक्टर निर्मल खत्री ने 6 दिवसीय पुस्तक मेला आयोजन को सफल बनाने में दिन-रात एक किए हुए सभी लोगों को लोगों को तथा साहित्य मेले में पुस्तक स्टाल लगाए हुए प्रकाशन के कर्मचारी, साहित्यक मेले में पहुंचकर अपना सहयोग आशीर्वाद तथा साहित्य के प्रति लोगों को प्रेरित करने वाले विशिष्ट मेहमानों को भी हार्दिक बधाई एवं धन्यवाद दिया, और कहा कि ऐसे साहित्यिक आयोजन करके शिक्षा को बढ़ावा देकर उनको बहुत ही आत्म संतुष्टि मिलती है,कि समाज में फैल रहे नफरत द्वेष अहिंसा को किताबें कला और संगीत के माध्यम से ही समाप्त किया जा सकता है, जो जितना शिक्षित होगा वह समाज को एक स्वस्थ पारदर्शी भयमुक्त विकसित वातावरण बनाने में मददगार साबित होगा। अयोध्या धाम के महापौर ने ऐसे आयोजन करने के लिए पुस्तक मेला सचिव डॉ. निर्मल खत्री पुस्तक मेला की अध्यक्ष श्रीमती कुसुम मित्तल पुस्तक मेला प्रभारी रीता खत्री, कार्यक्रम संयोजिका नमिता मेहरोत्रा, कोषाध्यक्ष राजकुमार खत्री को अयोध्या धाम सहित तथा उत्तर प्रदेश के अन्य जनपदों से इस मेले में पहुंच रहे साहित्य प्रेमियों की ओर से पुस्तक मेला आयोजकों को धन्यवाद ज्ञापित किया। समापन अवसर पर प्रोफेसर ए के मित्तल, अतुल भटनागर, प्रभात टंडन, राकेश केसरवानी, रजत खत्री, अंकुर खत्री सहित सैंकड़ों लोग मौजूद रहे।

अयोध्या पुसतक मेला

अमरकांत का लेखन यथार्थ की प्रभावी अभिव्यक्ति: रघुवंश मणि

अयोध्या। हिंदी कथा संसार में प्रेमचंद के आने के बाद साहित्य कल्पना की वस्तु नहीं बल्कि यथार्थ को देखने का साधन बना। वहीं अमरकांत का लेखन यह दशार्ता है कि- यथार्थ को प्रभावशाली तरीके से अभिव्यक्त किया जा सकता है। यह विचार आलोचक रघुवंशमणि ने हिन्दी के प्रख्यात कथाकार अमरकांत के जन्म शताब्दी वर्ष पर जनवादी लेखक संघ द्वारा शताब्दी स्मरण श्रृंखला के तहत फैजाबाद पुस्तक मेले में हिन्दी कथा परंपरा और अमरकांत विषय पर आयोजित परिचर्चा में व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि अमरकांत यथार्थ को अनुशासित तरीके से व्यक्त करते हैं और ऐसा करते हुए वे अत्यंत निरपेक्ष और निस्पृह लगते हैं। कथा-लेखन में आइसबर्ग शैली का प्रयोग भी अमरकांत ने किया है। 'अमरकांत का यथार्थ पत्रकारिता के उनके अनुभवों से भी समृद्ध हुई है। अमरकांत अपने जीवन और लेखन में एक स्वरूप थे। उनकी यह सच्चाई महत्वपूर्ण है जो एक लेखक को महान बनाती है।

परिचर्चा की अध्यक्षता कर रहे वरिष्ठ कवि-लेखक स्वप्निल श्रीवास्तव ने कहा कि यदि हिन्दी की बीस कहानियों का चयन किया जाए तो उन सर्वश्रेष्ठ कहानियों में अमरकांत की कहानियां जरूर शामिल होंगी। उन्होंने कहा कि- हिन्दी पट्टी के मध्यवर्ग का

व्यापक दुख अमरकांत की कहानियों में व्यक्त हुआ है। अमरकांत से जुड़े एक संस्मरण का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि मेरी कहानी उन्होंने मनोरमा में प्रकाशित की थी। वे नये लेखकों को सदा बढ़वा देते थे। परिचर्चा को आगे बढ़ाते हुए कवि चिंतक आरडी आनंद ने कहा कि अमरकांत प्रेमचंद की तरह सलाह नहीं देते बल्कि यथार्थ को शुद्ध रूप में सामने रखते हैं। अमरकांत के यहां विश्लेषण नहीं बल्कि कथा प्रवाह है और कहानी ही बाद में अपने लक्ष्य को उपस्थित करती है। कवि प्राध्यापक विशाल श्रीवास्तव ने कहा कि- अमरकांत के अनुसार भूख आदमी को मानवीय गरिमा से च्युत करती है। दोपहर का भोजन, निर्वासित शाम और कुहासा जैसी कहानियों में यह तथ्य देखा जा सकता है। अमरकांत ने आजादी के बाद की बदलती राजनीति के संदर्भ को अपनी कहानियों में शामिल किया है। जन शत्रु, हत्यारे, कुहासा, बस्ती, पलाश के फूल और दर्पण जैसी कहानियां इस बात की प्रमाणिकता हैं। परिचर्चा का संचालन कर रहे शायर एवं जनवादी लेखक संघ के सचिव मुजम्मिल फिदा ने अमरकांत का परिचय देते हुए कहां की वह हिंदी के प्रगतिशील और जनवादी सोच के प्रतिबद्ध कथाकार थे उन्हें ज्ञानपीठ साहित्य अकादमी व्यास सम्मान सोवियत लैंड नेहरू सहित कई समानों से सम्मानित किया गया।

ममता बनर्जी का बयान दकियानूसी विचार का हिस्सा

पिछले दो-तीन वर्षों में पश्चिम बंगाल मे महिलाओं के साथ दुष्कर्म जैसे अपराधों की भयावहता बढ़ी है। आरजीकर मेडिकल कालेज में छात्रा के साथ जिस प्रकार का अपराध हुआ इसी -प्रकार एक अन्य गंभीर मामला सामने आया है एक निजी मेडिकल कालेज की छात्रा के साथ गैंग रेप का। इस पर ममता बनर्जी का बयान 'घोर आपत्तिजनक कहा जा सकता है क्यों-कि किसी अपराध को लेकर यह कहना कि दूसरे राज्यों की अपेक्षा हमारे यहां कम अपराध है या फिर उन राज्यों की सरकार ऐसे मामलों में कठोर कार्यवाही' नहीं कर रही है। जैसी तुलना नहीं की जानी चाहिए। कानून व्यवस्था दोनों ही राज्यों की जिम्मेदारी है जिससे बह मुकर नहीं सकती हैं। यह सही है कि कोई भी राज्य प्रत्येक नागरिक के साथ पुलिस नहीं लगा सकती हैं लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि स्वयं की सुर-क्षा करना व्यक्ति का काम है। राज्य को अपनी कानून व्यवस्था का स्तर ऐसा रखना चाहिए- जिसमें हर नागरिक स्वयं को सुरक्षित समझे-चाहे वह पुरुष हो या महिला। जिम्मेदारी तो राज्य को ही लेनी पड़ेगी। इससे वह स्वयं को मुक्त नहीं कर सकता कि घटना जंगल के इलाके में हुई और छात्रा निजी मेडिकल कालेज की थी। महिलाओं के कॉलेज और हो या हास्टल के वैसे ही दरख़्त वाले होते हैं लड़कों के हॉस्टल में अनुशासन और समय का अनुपालन सुनिश्चित कराने में सफल नहीं हो पाते लेकिन लड़कियों के हास्टल पर वार्डन की सख्ती ज्यादा रहती है। वहां तो तय समय से अधिक समय तक बाहर रहने पर उन्हें इसका जवाब देना पड़ता है। यही कारण है कि यह सवाल बार-बार उठते हैं कि महिलाओं के समक्ष ही दरबे की स्थिति क्यों होती है यदि पुरुषों के हॉस्टल को दरबे में बदल दिया जाए तो आधी से अधिक समस्या आपने आप ही समाप्त हो जाएगी। इस मामले में भी घटना क्रम में हास्टल के एक युवक का नाम भी आ रहा है जिसे गिरफ्तार किया गया है।

सबसे बड़ा सवाल यहां कानून व्यवस्था का है और उसके बाद समाज का उत्पन्न होता है कि हमारा समाज किस हद तक गिर गया है। यदि उत्तर प्रदेश की गैंगरेप की घटनाओं को देखा जाए तो हाफ एन्काउन्टर से लेकर फुल एन्काउन्टर और बुलडोजर जैसी स्थितियों के बावजूद भी न तो ऐसे अपराध कम हुए और न ही महिलाओं के साथ होने वाले ऐसे घृणित अपराध थम रहे हैं। इसे हमें आंकड़ों से नहीं हकीकत से देखना होगा जो बेहद चिंता जनक है। ऐसे मामलों में ज्यादातर घटनाएं गैंगरेप की हो रही हैं। जो बेहद चिंताजनक है। मामला आरजीकर का हो या बीएचयू का या फिर अन्य मामले इनमें नशे की भी भूमिका रही है। इसलिए राज्यों को सिर्फ एक पहलू पर विचार करने की बजाए छात्राओं को कैम्पस में या घर में बंद रखने की बजाय ऐसा माहौल बनाना होगा जहां लोग अपराध के बारे में न सोच सकें। यदि रेप और महिलाओं के प्रति अपराधों को देखा जाए तो यह बंद घरों में भी होता है इसके आंकडे गवाह हैं। कॉलेज संस्थान ऐसी घटनाओं को लेकर अपना पल्ला इसलिए झड़ना चाहते हैं कि उन्हें लगता है कि संस्था की बदनामी होगी इसलिए वह घटनाओं पर पर्दा डालने का काम करते हैं जिससे स्थितियां और बिगड़ जाती हैं। महिला अपराधों को लेकर जब भी किसी सरकार को घेरा जाता है तो इसका ठीकरा अन्य राज्यों की घटनाओं से तुलना करके फोड़ा जाता है चाहे वह महिला मुख्यमंत्री वाला राज्य बंगाल ही क्यों ना हो।

यह सवाल बार-बार उठते हैं कि महिलाओं के समक्ष ही दरबे की स्थिति क्यों होती है यदि पुरुषों के हॉस्टल को दरबे में बदल दिया जाए तो आधी से अधिक समस्या अपने आप ही समाप्त हो जाएगी।

अथक परिश्रम से कुशल चौधरी ने रचा इतिहास

- बिना कोचिंग के बने आरएएस टॉपर
- मेहनत और लगन से कोई भी सपना पूरा किया जा सकता है
- कुशल ने अपनी तैयारी कॉन्स्टेबल बहन के ससुराल में रहकर की

अजमेर। आरएएस परीक्षा 2023 में टॉप करने वाले कुशल चौधरी (27) ने साबित कर दिया कि मेहनत और लगन से कोई भी सपना पूरा किया जा सकता है। अजमेर जिले के डूंगरिया कलां गांव के रहने वाले कुशल एक किसान परिवार से हैं। उनके पिता प्रभुराम चौधरी (60) किसान हैं, जिन्होंने शुरू से ही बेटे को पढ़ाई के लिए प्रोत्साहित किया। कुशल बताते हैं कि बचपन में जब वे ठीक से पढ़ाई नहीं कर पाते थे, तब पिता ही उन्हें पढ़ाया करते थे। कक्षा 10 तक की पढ़ाई गांव के स्कूल से और 12वीं कुचामन के नोबल स्कूल से की। इसके बाद महाराजा कॉलेज जयपुर से ग्रेजुएशन पूरा किया। 2018 से वे लैब असिस्टेंट के पद पर कार्यरत हैं। नौकरी लगने के बाद ही उन्होंने आरएएस की तैयारी शुरू की। उस दौरान उनके फिजिक्स टीचर खुद इस परीक्षा की तैयारी कर रहे थे, उन्होंने कुशल को प्रेरित किया और अपने नोट्स दिए। कुशल ने बिना कोचिंग के तैयारी शुरू की। पहले प्रयास में उन्हें सफलता नहीं मिली और उनकी रैंक 1038 रही लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी। 2021 में असफलता के बाद वे तनाव में आ गए थे और उम्मीद छोड़ दी थी। परिवार के सहयोग और प्रेरणा से उन्होंने दोबारा तैयारी शुरू की और आखिर आरएएस 2023 में प्रथम स्थान हासिल किया। उन्होंने बताया कि सात साल की इस यात्रा में कई उतार-चढ़ाव आए, समाज और परिवार का दबाव भी झेलना पड़ा, लेकिन लक्ष्य से कभी भटके नहीं। कुशल ने कहा कि आरएएस क्लियर करने में मुझे सात साल लग गए। परिवार और समाज दोनों की उम्मीदें मुझ पर थीं लेकिन मैंने हार नहीं मानी। उन्होंने बताया कि उनके परिवार में पांच बहनें हैं। परिवार चाहता था कि उनकी शादी भी बहनों के साथ हो जाए लेकिन उन्होंने परिवार से थोड़ा और समय मांगा ताकि सपने को पूरा कर सकें। दिलचस्प बात यह रही कि जब परिणाम आया, तब कुशल बाहर घूम रहे थे। उन्होंने इस बार दोस्त से कहा था कि वह रिजल्ट चेक करे, क्योंकि पिछली बार जब उन्होंने खुद देखा था, तब सफलता नहीं मिली थी। दोस्त ने फोन कर बताया कि उनकी फर्स्ट रैंक आई है। पहले तो उन्हें यकीन नहीं हुआ, लेकिन एडमिट कार्ड निकालकर रोल नंबर से चेक किया तो विश्वास हुआ।

कुशल ने अपनी तैयारी कॉन्स्टेबल बहन के ससुराल में रहकर की थी। उन्होंने सफलता का श्रेय अपने परिवार, बहनों और जीजा को दिया। कुशल कहते हैं कि जिस भी विभाग में सेवा का अवसर मिलेगा, मैं पूरे विश्वास और समर्पण से अपनी ड्यूटी निभाऊंगा।

दीपावली पर अलर्ट पुलिस, हथियारबंद जवानों संग निकाला फ्लैग मार्च

बाड़मेर। दीपावली के मद्देनजर बाड़मेर पुलिस पूरी तरह से अलर्ट मोड पर है। शुक्रवार रात पुलिस ने शहर के मुख्य बाजारों और मार्गों पर हथियारबंद जवानों के साथ फ्लैग मार्च निकाला। साथ ही पुलिस ने मुख्य चौराहों पर नाकाबंदी कर वाहनों की सघन तलाशी ली, ताकि किसी भी अप्रिय घटना को रोका जा सके।

एसपी नरेंद्र सिंह मीणा के निर्देशन में दो दलों में फ्लैग मार्च निकाला गया। पहला दल अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक जस्साराम बोस और उपाधीक्षक रमेश कुमार शर्मा के नेतृत्व में एसपी ऑफिस से रवाना हुआ, जो विवेकानंद सर्किल, अहिंसा सर्किल, मुख्य बाजार और सुभाष चौक होते हुए समाप्त हुआ।

दूसरा दल महिला सेल के एएसपी नितेश आर्य और डीएसपी अरविंद जांगिड़ के नेतृत्व में कलेक्टर आव-ास, राय कॉलोनी, ओवरब्रिज, पीजी कॉलेज, सिणधरी सर्किल, सिटी सेंटर और महावीर नगर सहित विभिन्न इलाकों से गुजरा।

फ्लैग मार्च का उद्देश्य दीपावली के दौरान शहर में

शांति व्यवस्था बनाए रखना और नागरिकों में सुरक्षा की भावना पैदा करना था। पुलिस अधिकारियों ने लोगों से कानून व्यवस्था का पालन करने, अफवाहों पर ध्यान न देने और आपसी सद्भाव बनाए रखने की अपील की। शहर के चौहटन सर्किल, सिणधरी स-र्किल और अन्य मुख्य मार्गों पर नाकाबंदी की गई, जहां पुलिस ने वाहनों की सघन जांच की। इस दौरान हथियारबंद जवान भी मुस्तैद रहे। पुलिस का कहना है कि यह अभियान दीपावली के दौरान शांति और सुरक्षा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से चलाया गया है।

एकल शिक्षक स्कूलों का परिदृश्य भारत के विकास की पोल खोलने वाला

हम छात्रों के बीमार भविष्य की बुनियाद ही रख रहे हैं और ऐसी बीमार बुनियाद पर खड़ा राष्ट्र कैसे स्वस्थ, सक्षम एवं उन्नत होगा? शिक्षा के प्रति यह उपेक्षा हमारे सत्ताधीशों की संवेदनहीनता का भी पर्याय है।

भारत में आज भी कई सरकारी और प्राइवेट स्कूल के बच्चे सिर्फ एक शिक्षक के भरोसे सभी विषय पढ़ रहे हैं। शिक्षा मंत्रालय के गतिमान वर्ष 2024 25 के अधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, देश के कुल 1,04,125 स्कूलों में एक ही शिक्षक सभी कक्षाओं एवं सभी विषयों को पढ़ा रहे है। यह आकडा हमारे शिक्षा तंत्र की विफलता को दर्शाना ही नहीं रहा है बल्कि चिन्ताजनक स्थिति को क्या कर रहा है। ये आंकड़े हमारे शैक्षणिक विकास पर एक गंभीर प्रश्न खड़ा कर रहे हैं। शिक्षा किसी राष्ट्र की आत्म होती है स्वामी विवेकानंद का यह वाक्य आज भारत की शिक्षा व्यवस्था पर एक कसक बनकर उभरता है। जब शिक्षा की आत्म चावल होती है तो राष्ट्र का शरीर कभी स्वस्थ नहीं रह सकता।

शिक्षा मंत्रालय के ये हालिया आंकड़े बताते हैं कि एकल शिक्षक स्कूलों में करीब पौने तीस लाख विद्यार्थी अध्ययन कर रहे है। बताया जाता है कि आध प्रदेश में ऐसे स्कूलों की संख्या सबसे ज्यादा थी. जबकि उसके बाद उत्तर प्रदेश, झारखंड, महाराष्ट्र, कर्नाटक और लक्षद्वीप का स्थान है। एक तो हमारे देश में शिक्षा का बजट पहले ही बहुत कम है, फिर उस धन का सही उपयोग नहीं हो पाना एक भ्रष्टाचार ही है। इसमें दो राय नहीं कि प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षा के गिरते स्तर के मूल में हमारे नीति-नियंताओं की अनदेखी ही प्रमुख कारक है। आखिर हम अपने नौनिहालों को कैसी शिक्षा दे रहे हैं? आखिर उनके बेहतर भविष्य की हम कैसे उम्मीद करें? जाहिर बात है कि एक शिक्षक सामाजिक विषय भाषा विज्ञान, अंग्रेजी और गणित में माहिर नहीं हो सकता। एक शिक्षक छात्रों की हाजिरी दर्ज करेगा या पढ़ाई कराएगा? एकल शिक्षक स्कूलों का परिदृश्य भारत के विकास की पोल खोलने वाला है। भले ही एकल शिक्षक स्कूलों में पिछले वर्ष की तुलना में 6 प्रतिशत की कमी दर्ज हुई हो. फिर झानी बड़ी संख्या में ऐसे स्कूलों का होना हमारी शिक्षा व्यवस्था की बड़ी नाकामी को ही उजागर कर रहा है। यह स्थिति किसी एक आकड़े को नहीं बल्कि राष्ट्र के भक्यि की गहरी सदी की तस्वीर है।

कल्पना कीजिए एक शिक्षक प्रशासनिक काम भी करता है, मिड-डे मील की निगरानी भी करता है और साथ में सभी कक्षाओं को पढ़ाने की जिम्मेदारी भी निभाता है। क्या वह शिक्षक शिक्षक रह जाता है या व्यवस्था का बोझ उठाने वाला मजदूर बन जाता है ? इन बच्चों की शिक्षा कैसी होगी, जिनके लिए का एकमात्र द्वार ही बकान पेक्षा और तंगहाली से भरा है? यह संकट केवल ग्रामीण भारत तक सीमित नहीं है शहरी और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में भी सैकड़ों स्कूल ऐसे हैं जहाँ विषय विशेषज्ञों की कमी, प्रयोगशालाओं की अनुपस्थिति और शिक्षण संसाधनों का अभाव है। नई शिक्षा नीति 2020 समय शिक्षा की बात करती है. लेकिन जब आधारभूत ढाँचा ही अपूर्ण हो तो नीतियों केवल दस्तावेज बनकर रह जाती है। हम 2047 तक विकसित भारत की परिकल्पना कर रहे हैं, पर क्या एकल शिक्षक स्कूलों की वह स्थिति उस दिशा में कोई सार्थक कदम का संकेत है?

यह बिना है कि भारत विश्व की सबसे बड़ी युवा आबादी वाला देश है, पर उसके बचपन की शिक्षा का यह हाल है। शिक्षा पर सरकारी व्यव जीडीपी का केवल 2.9 प्रतिशत है जबकि विकसित देशों में यह 5 से 6 प्रतिशत तक है जब शिक्षा ही निवेश नहीं बनेगी, तो विकास का आधार कहाँ से आएगा ? समस्या केवल शिक्षक संख्या की नहीं, बल्कि शिक्षकों की भर्ती प्रशिक्षण और संसाधनों की भी है। राज्यों में नियुक्ति प्रक्रियाएँ तक लटकी रहती हैं, स्थानांतरण नीति अव्यवस्थित है, और जो शिक्षक है भी उन्हें आधुनिक शिक्षा पद्धति डिजिटल शिक्षण, नवाचार और नैतिक मूल्य आधारित शिक्षण के प्रशिक्षण से चित रखा गया है। यह स्थिति उस समय और अधिक है जब हम हर मंच पर नया भारत और हविश्वगुरु भारत के नारे लगाते हैं। शिक्षा को राष्ट्रीय प्राथमिकता के रूप में देखने की आवश्यकता है। रक्षा और स्वास्थ्य की तरह शिक्षा को भी सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाए।

शिक्षक भर्ती में पारदर्शिता और समयबद्ध प्रक्रिया सुनिश्चित हो, दूरस्थ क्षेत्रों के स्कूलों का समुचित समायोजन किया जाए. तकनीक के माध्यम से डिजिटल शिक्षा का विस्तार हो और शिक्षकों को केवल वेतनभोगी कर्मचारी नहीं बल्कि राष्ट्र निर्माता के रूप में सम्मान मिले महात्मा गांधी ने कहा था. यदि हमें भारत को पुनः महान बनाना है, तो शिक्षा को पुन मानवीय बनाना होगा आज शिक्षा केवल परीक्षा और नौकरी तक सीमित हो गई है, जबकि उसका उद्देश्य चरित्र निर्माण और विवेक जागरण होना चाहिए।

विचारणीय है कि एक स्कूल की सारी कक्षाओं को एक शिक्षक कैसे पढ़ता होगा? विद्यार्थी कैसी और कितनी शिक्षा ग्रहण कर पाते होगे? शिक्षा का छात्रों का सवार्गीण विकास होता है। उन्हें पढ़ाई के साथ यह क्रियाओं का भी ज्ञान दिया जाना जरूरी होता है। लेकिन जब स्कूलों में पर्याप्त शिक्षक ही नहीं होंगे तो किताबी पढाई कैसी होगी, अंदाजा लगाना कठिन नहीं है। स्कूल में सिर्फ पढ़ाई ही महत्वपूर्ण नहीं होती। बच्चों का शारीरिक विकास पूरी तरह हो, इसके लिए खेलकूद एवं सांस्कृतिक गतिविधियों एवं योग- व्यायाम जैसी कक्षाओं को रखा जरूरत होती है। लेकिन जब शिक्षक ही पर्याप्त नहीं होंगे तो शिक्षा के साथ चलने वाली इन गतिविधियों की तो कल्पना भी नहीं की जा सकती है। निस्संदेह हम छात्रों के बीमार भविष्य की बुनियाद ही रख रहे हैं और ऐसी बीमार बुनियाद पर खड़ा राष्ट्र कैसे स्वस्थ, सक्षम एवं उन्नत होगा? शिक्षा के प्रति यह उपेक्षा हमारे सत्ताधीशों की संवेदनहीनता का भी पर्याय है।

बदलती जीवनशैली के साथ असंतुलित खानपान आर्थराइटिस का कारण: डॉ. गजेंद्र शर्मा

पडरौना। जिले में पिछले चार-पांच दिनों से पछुआ हवा के साथ हल्की ठंड शुरू हो गई है। मौसम में हुए इस बदलाव ने लोगों में जोड़ों व हड्डियों का दर्द बढ़ा दिया है। बुधवार को मेडिकल कॉलेज की ओपीडी में 23 रोगी ऐसे पहुंचे, जिनकी आयु 40 वर्ष से कम थी। उन्होंने डॉक्टर से जोड़ों व हड्डियों के दर्द की परेशानी बताई। जांच रिपोर्ट देखकर चिकित्सक ने ऐसे मरीजों को दवा के साथ उन्हें जीवनशैली में सुधार लाने के साथ पौष्टिक भोजन करने की सलाह दी।

जिला मुख्यालय स्थित मेडिकल कॉलेज में हर दिन 1500 से अधिक मरीजों की ओपीडी होती है। इसमें से हड्डी रोग से जुड़ी बीमारी के भी अधिक मरीज शामिल होते हैं। मेडिकल कॉलेज की ओपीडी में 80 से 100 मरीज प्रतिदिन आर्थराइटिस रोग के पहुंच रहे हैं। इसके अलावा सर्वाधिक रोगी वायरल के विभिन्न लक्षणों से पीड़ित पाए जा रहे हैं। वहीं पछुआ हवा में लोगों को कमर व घुटने का दर्द से परेशान कर रहा है।

हड्डी रोग विशेषज्ञ असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. गजेंद्र शर्मा ने बताया कि इसकी मुख्य वजह खराब दिनचर्या है। उन्होंने बताया कि बदलती जीवनशैली के साथ असंतुलित खानपान आर्थराइटिस का कारण बनता जा रहा है, जो सिर्फ उम्र दराजों में ही नहीं, कम आयु के लोगों में भी प्रभावी हो रहा। 30-40 वर्ष की उम्र में ही जोड़ों के दर्द से पीड़ित मरीजों की संख्या बढ़ रही है। उन्होंने बताया कि वजन वृद्धि, शारीरिक निष्क्रियता, व्यायाम से दूरी इसके मुख्य कारण हैं।

अधिक वजन जोड़ों पर दबाव डालता है, जो हल्की ठंड में सूजन व दर्द देता है। इसलिए खानपान में पौष्टिकता के साथ डेयरी खाद्य भी शामिल करें। व्यायाम के लिए समय जरूर निर्धारित रखें। इन उपायों से बिना दवा प्रयुक्त किए ही निरोग रह सकते हैं। इसलिए पहले खानपान में बदलाव व योग का सहारा लेना चाहिए। जब लाभ न मिले तभी उपचार प्रभावी करें।

त्योहारों का सेल्फी ड्रामा: दीपक की लौ से ज्यादा रोशनी अब मोबाइल की फ्लैश में

त्योहार हमारे समाज की आत्मा होते हैं – वह समय जब इंसान ईश्वर, प्रकृति और अपने संबंधों के प्रति आभार व्यक्त करता है। लेकिन अब हर त्योहार के साथ एक नया किरदार जुड़ गया है – मोबाइल कैमरा। जैसे ही दीपक जलता है, आरती की थाली घूमती है या राखी बंधती है, पहला सवाल यही होता है – फोटो ली क्या?। पहले पूजा पूरी होती थी, फिर प्रसाद बाँटा जाता था; अब पहले स्टोरी लगती है, फिर पूजा होती है। यह वही भारत है जहाँ कभी मन का उत्सव मनाया जाता था, आज वही मीडिया का उत्सव बन गया है। दीपावली अब दीपों की नहीं, सजावट की पोस्टों की रात है। घरों की सफाई से ज्यादा लोग कैमरे का कोण सुधारने में व्यस्त रहते हैं। माता लक्ष्मी की प्रतिमा की पूजा से पहले ह्लबूमरैंगह्व बनता है, और पटाखों से पहले कैप्शन तय होता है – दीवालीकीवाइब्स परिवारकाप्यार। ऐसा लगता है मानो हर व्यक्ति का त्योहार सोशल मीडिया पर दिखना चाहिए, वरना वह अधूरा है। यह डिजिटल प्रतिस्पर्धा अब भक्ति से ज्यादा ह्यलाइकह्व का खेल बन चुकी है।

करवा चौथ जैसे व्रतों का जो भाव था – प्रेम, समर्पण और आशीर्वाद – वह अब फोटो खिंचवाने और छूट वाले ऑफर में बँट गया है। सेल्फी विद सासू माँ, उपवास वाला चेहरा और चाँद के साथ तस्वीर जैसी प्रवृत्तियाँ अब त्योहार की नई पहचान हैं। पहले चाँद देखने का रोमांच था, अब क्लिक करने का जुनून है। एक जमाना था जब महिलाएँ साड़ी पहनती थीं पूजा के भाव से; आज वही साड़ी ब्रांड को टैग करने का साधन बन गई है। त्योहार अब प्रेम का नहीं, प्रदर्शन का पर्व बन गया है। होली भी अब रंगों का नहीं, रंगीन दिखावे का खेल है। पहले जो चेहरे रंगों में डूबे होते थे, अब वे फि ल्टर में धुल चुके हैं। लोग अब एक-दूसरे को रंग लगाने से ज्यादा डरते हैं कि कपड़े खराब हो जाएँगे, फोटो में अच्छा नहीं लगूँगा।

सेल्फी विद गुलाल में रंग तो हैं, पर अपनापन नहीं। यह होली अब मन की नहीं, मेकअप की होली बन गई है।

ईद, क्रिसमस, नवरात्र – हर धर्म का उत्सव अब एक ही रंग में रंग गया है – डिजिटल दिखावे का रंग। मस्जिद या गिरजाघर के सामने मुस्कुराती तस्वीरें, थाली में सजे पकवानों के फोटो, और शीर्षक –प्यार और शांति बाँट रहे हैं। पर क्या सचमुच प्यार और शांति फैल रही है, या बस दिखावा? त्योहार अब इंसान को जोड़ने की बजाय, तुलना और प्रतिस्पर्धा का कारण बनते जा रहे हैं। उसकी लाइटिंग ज्यादा सुंदर, उसका मंडप बड़ा, उसके पास महँगी सजावट– यह सब उस आत्मीयता को निगल गया है जो कभी परिवारों की पहचान थी। यह सेल्फी नाटक इतना गहरा हो चुका है कि अब भक्ति का भी अभिनय होता है। मंदिर में जाते ही लोग पहले फोन निकालते हैं, फिर हाथ जोड़ते हैं। आरती लाइव होती है, पर मन ऑफलाइन। दान सोशल मीडिया पर दिखाया जाता है, ताकि दूसरों को पता चले कि हम भी नेक हैं। भक्ति निजी नहीं रही, सार्वजनिक प्रदर्शन बन गई है। आस्था अब आत्मा से नहीं, प्रसारण से चलती है।

मनोविज्ञान की दृष्टि से देखें तो यह डिजिटल आस्था एक गहरी बेचैनी का परिणाम है। इंसान अब अपने हर अनुभव का प्रमाण सोशल मीडिया से चाहता है। उसे लगता है कि अगर कोई चीज कैमरे में नहीं आई तो वह हुई ही नहीं। यही कारण है कि अब त्योहारों में मुस्कान असली नहीं, अभ्यास की हुई होती है। बच्चे तक कैमरे के सामने हैप्पी दिवाली बोलना सीख चुके हैं। रिश्तों की गर्माहट अब कैमरे की ठंड में जम गई है।

त्योहारों का असली अर्थ था – रुकना, साँस लेना, जुड़ना।

अब अर्थ बदल गया है – सजना, पोस्ट करना, भूल जाना।

लोगों को यह भी याद नहीं रहता कि त्योहार का मूल कारण क्या था – बस इतना याद रहता है कि किस दिन क्या पोस्ट करना है। यह ह्यसेल्फी संस्कृतिह्व धीरे-धीरे उस आध्यात्मिक गहराई को खा रही है जो भारतीय समाज की पहचान थी।

अब त्यौहार आत्मा का नहीं, छवि का दर्पण बन गए हैं। बाजार ने भी इस प्रवृत्ति को भुनाने में देर नहीं लगाई। हर त्यौहार से पहले सेल्फी पृष्ठभूमि, फोटो मंच, डिजिटल सजावट और त्योहार संग्रह की बाढ़ आ जाती है।

पूजा की थाली से ज्यादा महत्त्व अब पैकेजिंग का हो गया है। त्योहार अब आध्यात्मिक नहीं, ब्रांडेड अवसर बन चुके हैं। दीपावली अब ह्लऑनलाइन खरीदारी पर्वह्व है, नवरात्र ह्लगरबा नाइट्स प्रायोजित कार्यक्रमह्व है, और होली ह्लकलर ब्लास्ट आयोजनह्व बन चुकी है। जहाँ पहले त्योहार आत्मा को शुद्ध करते थे, अब वह जेब को खाली कर देते हैं।

सोशल मीडिया पर दिखावे की इस होड़ ने समाज में एक अजीब-सी भावनात्मक दूरी पैदा कर दी है। लोगों को लगता है कि उन्होंने दूसरों की फोटो देखकर उनसे जुड़ाव बना लिया – जबकि असल में वह जुड़ाव एक भ्रम है। त्योहार जो कभी सबको साथ लाते थे, अब लोगों को अकेला कर रहे हैं। हर कोई अपने फोन में बंद है, दूसरे की मौजूदगी सिर्फ स्क्रीन पर है। ह्लपरिवार की फोटोह्व तो पूरी है, लेकिन परिवार बिखरा हुआ है। यह सब लिखते हुए एक प्रश्न चुभता है – क्या हम ईश्वर से जुड़ रहे हैं या नेटवर्क सिग्नल से? क्या हमें खुशी मिल रही है या बस प्रतिक्रिया? कहीं ऐसा तो नहीं कि हमारे त्योहार अब आत्मा से नहीं, कैमरे की चमक से रोशन हो रहे हैं?

त्योहारों का असली अर्थ तब लौटेगा जब हम कैमरा नीचे रखकर, किसी के चेहरे पर सच्ची मुस्कान देखेंगे। जब दीया सिर्फ.फोटो के लिए नहीं, अंधेरे के लिए जलाया जाएगा। जब करवा चौथ पर फोटो नहीं, साथ बैठकर एक-दूसरे की आँखों में सुकून ढूँढा जाएगा। जब होली पर रंग लगाते वक्त डर नहीं, अपनापन होगा। त्योहार तब लौटेंगे, जब हम दिखाना बंद करेंगे – और महसूस करना शुरू करेंगे। त्योहारों का यह सेल्फी ड्रामा तभी खत्म होगा जब इंसान अपने अंदर झाँककर यह कह सके – मुझे किसी की लाइक नहीं चाहिए, मुझे बस अपने अपनों की सच्ची मुस्कान चाहिए।

-प्रियंका सौरभ

गोरखपुर। महानगर के प्रमुख बाजारों में धनवंतरि जयंती के अवसर पर महानगरवासियों ने आधीरत तक जमकर खरीदारी की।

ऑटो और ई-रिक्शा चालकों की मनमानी से यातायात व्यवस्था चरमराई

गोरखपुर। दीपावली में बाजारों में बढ़ी भीड़ जहां रौनक बढ़ा रही है, वहीं बेलगाम ट्रैफिक व्यवस्था ने लोगों का मूड बिगाड़ दिया है। शहर की प्रमुख सड़कों पर ऑटो और ई-रिक्शा चालकों की मनमानी से यातायात व्यवस्था चरमराई हुई है। पुलिस की मौजूदगी के बावजूद न तो चालकों में खौफ दिख रहा है और न ही ट्रैफिक सुधार के लिए कोई ठोस कार्रवाई।

शनिवार को गोलघर, रेती रोड, अयोध्या सिंह चौराहा, रेलवे स्टेशन रोड और बस स्टेशन के पास दिनभर ट्रैफिक जाम की स्थिति बनी रही। कहीं ऑटो सड़क के बीच खड़े थे तो कहीं ई-रिक्शा सवारियां भरने के लिए आधी सड़क घेरकर खड़े हो गए। इसी वजह से पैदल चलना तक मुश्किल हो गया। हर ओर हॉर्न का शोर, ठसाठस भरी सड़कें और धूल-धुआं जैसे रफ्तार ने खुद से हार मान ली हो। सुबह से ही गोलघर, रेलवे स्टेशन रोड, रेती रोड, अयोध्या सिंह चौराहा और बस स्टेशन तिराहा वाहनों से पटा रहा। जगह-जगह ई-रिक्शा और ऑटो चालकों ने सवारियां भरने के लिए सड़क के बीच गाड़ियां खड़ी कर दीं। ट्रैफिक पुलिस के जवान माइक लेकर व्यवस्था संभालने की कोशिश करते रहे, लेकिन बेलगाम चालकों के आगे पूरी तरह बेबस नजर आए। शहर के सबसे व्यस्त बाजारों में पार्किंग की कोई स्पष्ट जगह नहीं है। दोपहिया वाहन फुटपाथ पर चढ़ा दिए जा रहे हैं, जबकि चार पहिया सड़क किनारे आधी लेन घेरकर खड़े हैं।

त्योहारों में बढ़ी भीड़ को देखते हुए अतिरिक्त फोर्स लगाई गई है। ऑटो और ई-रिक्शा चालकों पर चालान की कार्रवाई चल रही है।

राम कुमार पांडेय
एसपी ट्रैफिक

गोलघर से विजय चौक की 500 मीटर दूरी तय करने में लोगों को आधे घंटे से ज्यादा समय लगा। यहीं आलम रेल म्यूजियम चौराहे से रेलवे व बस स्टैंड रोड पर भी रहा। खरीदारी करने निकले परिवारों का कहना है कि त्योहार की उमंग अब परेशानी में बदल रही है।

जातीय नफरत की सर्कस : विवेकहीन समाज की एक त्रासदी

भारतीय समाज की जड़ें हजारों वर्षों पुरानी हैं। पर इन जड़ों में कई ऐसी गांठें भी हैं, जिन्होंने इंसानियत को बाँट दिया है। जाति का विचार शुरूआत में शायद एक सामाजिक संगठन का ढांचा था, पर समय के साथ यह व्यवस्था अन्याय, भेदभाव और शोषण का औजार बन गई। ऊँच-नीच की मानसिकता ने समाज को वर्गों में बाँट दिया और इस बंटवारे ने इंसान की पहचान को उसके कर्म से हटाकर उसकी जाति से जोड़ दिया।

जब कोई समाज अपने नैतिक विवेक को खो देता है, तब वह अन्याय को सामान्य मानने लगता है। यही आज की सबसे बड़ी समस्या है। जातीय सोच इतनी गहराई से हमारी मानसिकता में समा गई है कि लोग अन्याय को भी ह्लअपनों के पक्ष मेंह्व देखकर सही ठहराने लगते हैं। किसी अपराधी की जाति अगर अपनी है, तो लोग उसे निर्दोष मान लेते हैं; और अगर पीड़ित किसी अन्य जाति का है, तो उसके दर्द के प्रति संवेदना गायब हो जाती है। यह वह बिंदु है जहां इंसानियत मर जाती है और जातिवाद जीत जाता है।

राजनीति ने जातिवाद को जीवित रखा है, बल्कि उसे हवा दी है। हर चुनाव में उम्मीदवारों की योग्यता नहीं, उनकी जातीय पहचान का हिसाब लगाया जाता है। नेता जानते हैं कि जातीय गोलबंदी उनकी सत्ता की नींव है, इसलिए वे समाज को एकजुट करने के बजाय बांटे रखना चाहते हैं। वोट के लिए जाति को हथियार बनाना सबसे खतरनाक प्रवृत्ति है, क्योंकि यह विभाजन न केवल लोकतंत्र की भावना को कमजोर करता है, बल्कि पीढ़ियों के मन में अविश्वास और घृणा बो देता है।

जातीय पूर्वाग्रहों से बाहर निकलने का सबसे सशक्त माध्यम शिक्षा है। लेकिन दुर्भाग्य यह है कि शिक्षा का प्रसार भी कई बार समान अवसरों के बिना अधूरा रह जाता है। जब तक हर वर्ग को समान अवसर, समान मंच और समान सम्मान नहीं मिलेगा, तब तक जातीय सोच का अंत संभव नहीं है। सच्ची शिक्षा वही है जो मनुष्य को स्वतंत्र सोचने और दूसरों के दुःख को समझने की क्षमता दे।

मीडिया समाज का दर्पण होता है। पर जब दर्पण ही धुंधला हो जाए, तो सच्चाई कैसे दिखाई देगी? जातीय हिंसा या भेदभाव की खबरें अक्सर राजनीतिक दृष्टिकोण से तो दिखाई जाती हैं, पर उनमें इंसानियत की करुणा का अभाव होता है। जरूरत है कि मीडिया समाज में संवाद का माध्यम बने, न कि विभाजन का। पत्रकारिता का मूल धर्म है सत्य को सामने लाना – चाहे वह किसी जाति, वर्ग या धर्म के विरुद्ध क्यों न हो।

हर युग में कुछ ऐसे चालाक और धूर्त लोग रहे हैं जो समाज की कमजोरियों को भुनाते हैं। कभी धर्म के नाम पर, कभी जाति के नाम पर, कभी भाषा के नाम पर – वे हमें बाँटकर अपनी कुर्सी और शक्ति को सुरक्षित करते हैं। हम वही जनता हैं जो उनके शो में दर्शक बन बैठे हैं। वे खेल दिखाते हैं, हम ताली बजाते हैं – और हर बार यह सर्कस चलता रहता है। अगर हम सच में बदलाव चाहते हैं, तो हमें दर्शक नहीं, निर्णायक बनना होगा।

न्याय का अर्थ तभी पूरा होता है जब वह बिना किसी पूर्वाग्रह के किया जाए। न्याय का कोई रंग, धर्म या जाति नहीं होती। समाज को चाहिए कि वह ह्लहम बनाम वेह्व की मानसिकता से बाहर निकलकर ह्लसबके लिए न्यायह्व की भावना को अपनाए। यही लोकतंत्र का आधार है। अगर हर व्यक्ति अपने स्तर पर जाति से ऊपर उठकर सोचने लगे, तो यह बदलाव किसी क्रांति से कम नहीं होगा।

जातिवाद केवल एक सामाजिक समस्या नहीं, बल्कि एक मानसिक गुलामी है। यह हमें विवेकहीन, असंवेदनशील और विभाजित बनाता है। आज समय की सबसे बड़ी मांग यही है कि हम अपने भीतर झाँकें और समझें कि असली पहचान हमारी जाति नहीं, बल्कि हमारा कर्म और हमारा चरित्र है। सदियों से जो दीवारें हमें बाँटती आई हैं, उन्हें तोड़ने की शुरूआत हमें खुद से करनी होगी। जब समाज न्याय के पक्ष में खड़ा होना सीख लेगा – बिना यह देखे कि पीड़ित या अपराधी किस जाति का है – तभी हम कह सकेंगे कि हमने सच्चे अर्थों में सभ्यता की ओर कदम बढ़ाया है। अन्यथा यह जातीय सर्कस यूँ ही चलता रहेगा, और हम अनजाने में उसके दर्शक बने रहेंगे।

-प्रियंका सौरभ

महिलाओं की वजाइनल हेल्थ को लेकर जागरूकता बेहद जरूरी

नई दिल्ली। महिलाओं की वजाइनल हेल्थ को लेकर जागरूकता बेहद जरूरी है क्योंकि कई बार शर्म या झिझक की वजह से महिलाएं समस्याएं छुपा लेती हैं। ऐसी ही एक समस्या है बार्थोलिन सिस्ट जिसमें वजाइना के पास एक छोटी गांठ बन जाती है। ये गांठ तब दर्दनाक होती है जब उसमें इंफेक्शन हो जाता है या इसका आकार बढ़क्रू जाता है। शुरूआत में दवाइयों से इसका इलाज किया जा सकता है लेकिन अगर सिस्ट बड़ी हो जाए तो सर्जरी करानी पड़ती है।

कुछ महिलाओं में यह सिस्ट बारह्मबार हो जाती है। आखिर क्या है ये बार्थोलिन सिस्ट और इसके कारण पहले बात करते हैं बार्थोलिन सिस्ट क्या है?

अमेरिकी राष्ट्रीय स्वास्थ्य संस्थान (एनआईएच) के नेशनल लाइब्रेरी ऑफ मेड़िसन में छपी एक शोध रिपोर्ट के मुताबिक बार्थोलिन सिस्ट वजाइना में मौजूद गांठ होती है। यह समस्या तब होती है जब वजाइना के दोनों ओर स्थित बार्थोलिन ग्लैंड़ का रास्ता ब्लॉक हो जाता है। अगर यह ब्लॉकेज बनी रहती है तो यह सिस्ट होने की वजह बन सकती है। इसके अलावा अगर पहले इंफेक्शन के दौरान इलाज या सर्जरी ठीक से नहीं हुई है तो भी इस सिस्ट की समस्या बार-बार हो सकती है। शारीरिक संबंध के चलते भी बार-बार सिस्ट की समस्या हो सकती है। वजाइना में फ्लूड़ ड्रेनेज में बाधा भी बार-बार गांठ बना सकती है। हार्मोन के बदलाव एक साथ होने से भी सिस्ट की संभावना बढ़जाती है। तनाव भी एक बड़ा कारण हो सकता है क्योंकि तनाव बढ़ने से इम्यूनिटी पर असर पड़ता है। ऐसे में वजाइनल हेल्थ भी प्रभावित होती है जो बारह्मबार सिस्ट होने की वजह बन सकती है। बार्थोलिन सिस्ट अगर छोटी है तो इसमें दर्द का एहसास कम या ऐसा भी हो सकता है कि इसमें दर्द नहीं हो। लेकिन खुजली की समस्या बनी रहेगी। ॥ तनाव भी एक बड़ा कारण हो सकता है क्योंकि तनाव बढ़ने से इम्यूनिटी पर असर पड़ता है। ऐसे में वजाइनल हेल्थ भी प्रभावित होती है जो बार-बार सिस्ट होने की वजह बन सकती है।

अध्ययन : ड़िप्रेशन और ड़िमेंशिया के बीच संबंध बहुत जटिल

नई दिल्ली। एक अध्ययन के अनुसार ड़िप्रेशन होने से दिमाग की बीमारी ड़िमेंशिया होने का खतरा बढक्रू जाता है। यह खतरा मध्य उम्र के साथ-साथ पचास साल या उससे अधिक उम्र के लोगों में भी देखा गया है। ड़िमेंशिया एक गंभीर बीमारी है जिसमें व्यक्ति की याददाश्त सोचने और समझने की क्षमता कमजोर हो जाती है। दुनियाभर में 5.7 करोड़.से अधिक लोग इस बीमारी से पीड़ित हैं। फिलहाल इसका कोई पक्का इलाज नहीं है इसलिए यह बहुत जरूरी है कि हम उन कारणों को समय रहते पहचानें और ठीक करें जो ड़िमेंशिया का खतरा बढ़ा सकते हैं। अध्येताओं ने पाया कि ड़िप्रेशन और ड़िमेंशिया के बीच संबंध बहुत जटिल है। इसमें देर तक सूजन होना, दिमाग के कुछ हिस्सों का सही से काम न करना, रक्त नलिकाओं में बदलाव, दिमाग में कुछ जरूरी प्रोटीन या फैक्टर का बदल जाना, न्यूरोट्रांसमीटर नाम के रसायनों का असंतुलन होना आदि शामिल हैं। इसके अतिरिक्त जेनेटिक और हमारे रोजमर्रा के व्यवहार भी ड़िप्रेशन और ड़िमेंशिया के जोखिम को बढ़ा सकते हैं। जर्नल ई-क्लिनिकल मेडिसिन में प्रकाशित अध्ययन बताता है कि हमें जिंदगी के हर दौर में ड़िप्रेशन को पहचानना और उसका इलाज करना बहुत जरूरी है। हमें इसे हल्के में नहीं लेना चाहिए। ब्रिटेन के नॉटिंघम विश्वविद्यालय में मानसिक स्वास्थ्य संस्थान और स्कूल ऑफ मेड़िसिन के जैकब ब्रेन ने कहा सरकार और स्वास्थ्य विभाग को दिमाग की सेहत पर विशेष ध्यान देना चाहिए, खासकर बीमारियों को होने से रोकने पर। इसके लिए जरूरी है कि लोग अच्छा और सही मानसिक स्वास्थ्य इलाज आसानी से पा सकें। पहले के कुछ अध्ययनों में पाया गया है कि जिन लोगों को ड़िप्रेशन होता है। उनमें बाद में ड़िमेंशिया होने की संभावना ज्यादा होती है। लेकिन अभी भी यह बात साफ नहीं है कि डिप्रेशन किस उम्र में सबसे ज्यादा खतरा बढाता है।

ज्ञानवर्धक सूत्र बताते हैं कि अगर ड़िप्रेशन मिडिल एज यानी 40-50 वर्ष की उम्र में शुरू होता है तो ज्यादा असर होता है जबकि कुछ का मानना है कि ड़िप्रेशन अगर बुढापे में यानी 60 वर्ष या उससे ऊपर में होता है, तो भी खतरा बढ़ता है। यह नया शोध अब तक के सारे पुराने शोधों को एक साथ लेकर आया है और इसमें नई जांच भी की गई है ताकि यह साफ तरीके से पता लगाया जा सके कि ड़िप्रेशन कब सबसे ज्यादा खतरा बढक्ष्क्षता है। ब्रेन ने कहा कि हमारे शोध से यह संभावना सामने आई है कि बुढ़क्षपे में ड़िप्रेशन होना सिर्फ एक समस्या नहीं, बल्कि यह ड़िमेंशिया की शुरूआत का पहला संकेत भी हो सकता है।

किरदार

इस जीवन में सबका किरदार है अपना अपना
किसी को मिलती है मंजिल कोई देखता रहता है सपना
कठपुतली की तरह नचाता है सब को वह
संसार में बहुत अद्भुत है जिसकी हर रचना
कोई मां का कोई पिता का किरदार है निभाता
जीवन का हर रिश्ता ऊपर से बन कर है आता
काम नहीं आता खून का रिश्ता भी कई बार
जुड़ जाता है किसी से फिर भी गहरा नाता
कोई किसी से नहीं मिलता न कोई है मिलता
यह सब तो पैदा होने से पहले ही तय हो जाता
अपनी मर्जी से कोई जी नहीं सकता यहां
जितना लिखा है उससे एक पल भी
ज्यादा नहीं जी पाता
अमीर के घर है पैदा होता है कोई
कोई गरीबी मे ही अपनी उम्र है बिताता
मनपसंद चीजे खा नहीं सकता कोई
कोई हर चीज का लुत्फ है उठाता
जीवन की डोर ऊपर वाले ने
रखी है अपने हाथ
लिखा है जितना उससे ज्यादा
नहीं मिलता किसी का साथ
कठपुतली की तरह नचाता है
खींचता रहता है डोर
कुछ नहीं मिलता उसे जो
जीवन से हो जाता हताश

घुमारवीं
जिला बिलासपुर हि प्र

उत्सव के पटाखे और वायु प्रदूषण शिशुओं की फेफड़ों को कैसे नुकसान पहुंचा सकते हैं तथा उनकी रक्षा करने के तरीके

विजय गर्ग

उत्सव के पटाखे समारोह, खुशी और रंग का प्रतीक हैं। लेकिन जबकि वयस्क द्दश्यों और ध्वनियों का आनंद लेते हैं, बच्चे धुएं, बारीक कणों और सल्फर डाइऑक्साइड जैसे हानिकारक गैसों के कॉकटेल में चुपचाप सांस ले रहे हैं। उत्सव समाप्त होने के बाद ये प्रदूषक हवा में लंबे समय तक रह सकते हैं, जिससे मोटी धुंध पैदा होती है जो शिशुओं और छोटे बच्चों के लिए विशेष रूप से हानिकारक होती है। डॉ. अकुश गार्ग के अनुसार ह्क्योंकि शिशुओं की फेफड़ों और प्रतिरक्षा प्रणाली अभी भी विकसित हो रही है, इसलिए वे अपने शरीर के वजन से अधिक तेज सांस लेते हैं, जिससे उन्हें प्रदूषण से संबंधित क्षति का सामना करना पड़ता है

शिशुओं के श्वसन स्वास्थ्य पर प्रदूषण क्या करता है प्रदूषित हवा के संपर्क में आने से खांसी, नाक की भीड़, सांस लेना और श्वसन संक्रमण हो सकता है। दीर्घकालिक संपर्क में आने से फेफड़ों का विकास धीमा हो सकता है, अस्थमा और जीवन के बाद एलर्जी होने की संभावना बढ़ सकती है। जिन शिशुओं में समय से पहले स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं होती हैं, उन्हें इससे भी अधिक खतरा होता है। डॉ. गार्ग ने आगे कहा कि ह्बेबियों के श्वसन मार्ग वयस्कों की तुलना में संकुचित होते हैं।ह्र प्रदूषकों से सूजन या चिड़चिड़ापन की थोड़ी मात्रा भी वयस्कों पर बहुत अधिक प्रभाव डाल सकती है। खराब वेंटिलेशन वाले इनडोर स्थानों में अपरिपक्व प्रतिरक्षा प्रणाली और लंबे समय तक संपर्क जोड़ना, तथा शिशु अत्यधिक कमजोर हो जाते हैं

यह केवल बाहरी धुआं ही खतरा नहीं है। त्यौहारों के दौरान, विशेष रूप से बिना उचित वेंटिलेशन वाले घरों में भी इनडोर हवा की गुणवत्ता प्रभावित होती है। पटाखे के कण घर में फंस सकते हैं, जिससे शिशुओं का एक्सपोजर समय बढ़ जाता है। माता-पिता को वायु शुद्धिकरण उपकरण का उपयोग करने, प्रदूषण के चरम घंटों में खिड़कियां बंद रखने और प्राकृतिक रूप से हवा की गुणवत्ता बढ़ाने में मदद करने के लिए शांति लिली या मकड़ियों जैसी इनडोर पौधों का परिचय देने की सलाह दी जाती है।

माता-पिता सरल कदम उठा सकते हैं वायु प्रदूषण से शिशुओं की रक्षा करना जटिल नहीं होना चाहिए। विशेषज्ञ अनुशंसा करते हैं।

आतिशबाजी प्रदर्शन के दौरान या तुरंत बाद शिशुओं को घर में रखें। यदि बाहर निकलना आवश्यक हो तो बच्चों को हल्के कपास के कपड़े पहनें। प्यूरिफायर या वायु शुद्ध करने वाले संयंत्रों के साथ इनडोर हवा की सफाई बनाए रखें। प्रतिरक्षा को मजबूत करने के लिए वृद्ध शिशुओं को पोषक तत्वों से भरपूर भोजन खिलाएं। चिड़चिड़ापन कम करने के लिए शिशुओं को हाइड्रेटेड और साफ रखें। धूम्रपान वाले क्षेत्रों से पूरी तरह बचें और पर्यावरण के अनुकूल, क्रैकर-मुक्त समारोहों को प्रोत्साहित करें। त्योहार का मौसम खुशी और उत्सव के लिए है, लेकिन यह शिशुओं के स्वास्थ्य की कीमत पर नहीं आना चाहिए। स्वच्छ, शांत समारोहों का समर्थन करने से न केवल पर्यावरण की रक्षा होती है बल्कि अगली पीढ़ी के लिए स्वस्थ फेफड़ों को भी सुनिश्चित किया जाता है। जैसा कि डॉ. अंकुश गार्ग कहते हैं, ह्स्वच्छ वायु की सुरक्षा से बच्चों के लिए आनंददायक त्योहार और स्वस्थ फेफड़े सुनिश्चित होते हैं शिशुओं के फेफड़ों का स्वास्थ्य, वायु प्रदूषण और बच्चे, बच्चों पर पटाखे के प्रभाव, नवजात स्वास्थ्य, पर्यावरण-अनुकूल दिवाली, शिशुओं को प्रदूषित होने से बचाना, शिशुओं में श्वसन स्वास्थ्य, दिवाली सुरक्षा युक्तियाँ, शिशुओं के लिए वायु शुद्धिकरण इत्यादि।

मलोट पंजाब

सरस मेले का जिलाधिकारी ने किया निरीक्षण

संतकबीरनगर। हीरालाल इंटर कॉलेज परिसर में आयोजित तीन दिवसीय सरस मेले का जिलाधिकारी आलोक कुमार ने गत दिनों शुक्रवार को निरीक्षण किया। स्टॉलों का निरीक्षण करने के दौरान डीएम ने स्वयं सहायता समूहों के कार्यों की प्रशंसा की। डीएम आलोक कुमार ने महिलाओं द्वारा निर्मित सामग्री की खरीददारी कर उनका उत्साहवर्धन किया। उन्होंने स्वयं सहायता समूह की महिलाओं से उत्पादों के उत्पादन के तरीके के बारे में भी जानकारी प्राप्त की और उत्पादों की मार्केटिंग के लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया। उपायुक्त एनआरएलएम प्रवीण शुक्ला ने बताया कि तीन दिवसीय सरस मेला 18 अक्तूबर तक रहेगा। इसमें स्वयं सहायता समूह की महिलाओं के द्वारा हस्त निर्मित उत्पादों की बिक्री के लिए काउंटर लगाए गए हैं। स्वयं सहायता समूह की महिलाओं द्वारा निर्मित उत्पादों की बिक्री स्वयं सहायता समूह की महिलाओं द्वारा ही किया जा रहा है।

असीम प्यार

'अजी सुनते हो। समय आ चुका है मेरे अण्डे देने का। थकान सी लगती है अब जी। मुझ अकेले से नीड़ बनाना सम्भव नहीं है। घर अकेले से नहीं बनता; जानते हो ना... मुझे मदद करोगे ना घर बनाने में...?' डाल पर बैठी मादा गौरैया नर गौरैये के पास फुदकती हुई गई।

'धत पगली कहीं की ! कैसी बात करती है तू ! मैंने तुझसे प्रीत की है। कस्मे खाई है साथ निभाने की। मुझ पर शक मत करो; प्लीज। बच्चे मेरे या तुम्हारे नहीं, हमारे होंगे। अब ऐसी बात कभी मत करना।' नर गौरैये ने अपनी चोंच से मादा गौरैये को सहलाया। इन दोनों का असीम प्यार देख मैं शर्मिंदा हो गया।

टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला'

घूँघट की बगावत

19 अक्टूबर 2025

प्रत्येक रविवार को प्रकाशित
हिन्दी साप्ताहिक समाचार पत्र

सेवा, सुरक्षा, सहयोग या आत्मघात ? हरियाणा पुलिस का संकट काल

हरियाणा इन दिनों एक ऐसे दौर से गुजर रहा है, जहाँ पुलिस महकमे की साख, मनोबल और संवेदनशीलता तीनों एक साथ संकट में दिखाई दे रहे हैं। पहले आईपीएस अधिकारी पूरन कुमार की आत्महत्या ने पूरे राज्य को झकझोर दिया और अब एएसआई संदीप लाठर की खुदकुशी ने इस त्रासदी को और गहरा कर दिया है। दोनों घटनाएँ न केवल पुलिस विभाग के भीतर की बेचैनी को उजागर करती हैं, बल्कि यह भी बताती हैं कि कानून के रखवाले ही जब अपने जीवन से हार मानने लगें, तो समाज की बुनियाद कितनी डगमगा जाती है।

एएसआई संदीप लाठर ने आत्महत्या से पहले जो वीडियो जारी किया, उसमें उसने अपने अफसरों और सिस्टम के रवैये पर सवाल उठाए। इससे पहले आईपीएस पूरन कुमार की मौत के बाद भी कई सवाल अनुत्तरित रह गए थे। अब इन दो आत्महत्याओं ने मिलकर एक ऐसा सिलसिला शुरू कर दिया है, जिसने हरियाणा पुलिस की छवि पर गहरा धब्बा छोड़ दिया है। आम जनता यह सोचने पर मजबूर है कि जो विभाग सुरक्षा और न्याय का प्रतीक माना जाता है, उसके भीतर इतना असंतोष, अविश्वास और भय कैसे पनप गया। हरियाणा पुलिस देश की सबसे अनुशासित और जुझारू पुलिस बलों में गिनी जाती रही है। लेकिन पिछले कुछ वर्षों में हालात ऐसे बने हैं कि इस बल के भीतर मनोबल टूटने लगा है। कहीं राजनीतिक दबाव है, कहीं जातिगत खींचतान, तो कहीं अफसरों के बीच अंतर्विरोध। आईपीएस पूरन कुमार की आत्महत्या के मामले में कई लोगों ने सवाल उठाया था कि क्या उन्हें किसी साजिश का शिकार बनाया गया? और अब संदीप लाठर की मौत के बाद यह सवाल और भी गंभीर रूप ले चुका है। यह पूरा घटनाक्रम किसी वेब सीरीज की तरह उलझा हुआ प्रतीत होता है, जिसमें हर पात्र का अपना दर्द है और हर मोड़ पर नया रहस्य खुलता है। परंतु यह कोई काल्पनिक कथा नहीं, बल्कि एक वास्तविक त्रासदी है – उन परिवारों की जिनके सदस्य कानून के रक्षक थे और अब उनकी आत्माएं न्याय की पुकार लगा रही हैं।

हरियाणा पुलिस एक गहरे संकट से गुजर रही है। पहले आईपीएस पूरन कुमार और अब एएसआई संदीप लाठर की आत्महत्या ने विभाग की कार्यस्-ांस्कृति, मनोबल और आंतरिक तनाव पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। लगातार आत्महत्याओं से यह स्पष्ट है कि वर्दी के पीछे इंसान टूट रहा है। राजनीतिक दबाव, जातिगत खींचतान और मानसिक अवसाद पुलिस व्यवस्था को खोखला बना रहे हैं। अब जरूरत है उच्च स्तरीय जांच के साथ-साथ जिला स्तर पर काउंसलिंग व्यवस्था की, ताकि खाकी का आत्मविश्वास लौट सके और सेवा, सुरक्षा, सहयोग का आदर्श दोबारा जीवित हो।

कानून और व्यवस्था बनाए रखने की जिम्मेदारी जिन लोगों के कंधों पर होती है, जब वही खुद अवसाद, निराशा और असहायता के शिकार हों, तो यह किसी भी राज्य के लिए चेतावनी की घंटी है। हरियाणा में हाल के वर्षों में कई बार पुलिस कर्मियों ने खुले मंच से यह स्वीकार किया है कि उनकी कार्यस्थितियाँ बेहद तनावपूर्ण हैं। लंबी ड्यूटी, छुट्टियों की कमी, ऊपरी आदेशों का दबाव और समाज की नकारात्मक धारणा झ ये सभी कारण एक पुलिसकर्मी के मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा असर डालते हैं। चिंता की बात यह है कि आत्महत्या जैसे चरम कदम का सिलसिला अब पुलिस में आम होता जा रहा है। पहले चंडीगढ़, अब रोहतक – हर बार एक नई जगह से वही खबर आती है कि एक और वर्दीधारी ने अपनी जान दे दी। यह सवाल उठाना लाजमी है कि आखिर पुलिस विभाग में ऐसा माहौल क्यों बन रहा है जहाँ मनोबल इतना कमजोर पड़ रहा है कि जीवन ही बोझ लगने लगे। कुछ लोगों का तर्क है कि इन घटनाओं के पीछे जातिवाद और राजनीति की भूमिका है। हरियाणा जैसे राज्य में, जहाँ जातीय समीकरण राजनीति से लेकर प्रशासन तक गहराई से जुड़े हुए हैं, यह संभावना पूरी तरह से नकारा नहीं जा सकती। किसी अधिकारी के साथ भेदभाव या दबाव, चाहे वह जातिगत हो या राजनीतिक, मानसिक रूप से तोड़ सकता है। यह वही आग है जो धीरे-धीरे पूरे सिस्टम को निगल रही है। हरित प्रदेश हरियाणा का सामाजिक ताना-बाना तभी सुरक्षित रहेगा, जब प्रशासन जातिवाद से ऊपर उठकर ईमानदार और निष्पक्ष कार्रवाई करेगा। अब सबसे बड़ा सवाल यह है कि शहीद कौन है – आईपीएस पूरन कुमार या एएसआई संदीप लाठर? दोनों ही अपने-अपने स्तर पर सिस्टम से लड़ते हुए हार गए। अगर कोई पुलिसकर्मी अपने अफसरों से न्याय की उम्मीद खो दे, तो वह किससे उम्मीद करेगा? जब ₹सेवा, सुरक्षा और सहयोग₹ का आदर्श वाक्य ही खोखला लगने लगे, तो यह न केवल संस्थागत विफलता है बल्कि मानवीय करुणा का भी अंत है। इस पूरे घटनाक्रम में मुख्यमंत्री नायब सैनी और डीजीपी ओपी सिंह की जिम्मेदारी बेहद अहम हो जाती है। उच्च स्तरीय जांच तो जरूरी है, लेकिन उससे भी ज्यादा जरूरी है एक ऐसा सिस्टम तैयार करना जो पुलिसकर्मियों के मानसिक स्वास्थ्य की रक्षा करे। जिला स्तर पर काउंसलिंग सत्र आयोजित किए जाने चाहिए ताकि कर्मचारी अपने तनाव, दबाव और व्यक्तिगत समस्याओं को साझा कर सकें। यदि किसी पुलिसकर्मी की मानसिक स्थिति अस्थिर पाई जाए तो उसे तुरंत मनोवैज्ञानिक सहायता दी जानी चाहिए और जब तक वह पूरी तरह सक्षम न हो, उसे सर्विस रिवॉल्वर न दिया जाए। यह सुझाव किसी सजा की तरह नहीं, बल्कि एक सुरक्षा कवच की तरह देखा जाना चाहिए। पुलिस की नौकरी आसान नहीं होती। हर दिन अपराधियों से सामना, समाज की उम्मीदें, और ऊपर से आदेशों की जटिलता झ इन सबके बीच इंसानियत को बचाए रखना कठिन है। अगर मानसिक स्थिरता को प्राथमिकता नहीं दी गई, तो ऐसी आत्महत्याओं की श्रृंखला आगे भी जारी रह सकती है। हरियाणा सरकार को यह भी समझना होगा कि पुलिस सिर्फ कानून लागू करने वाली एजेंसी नहीं, बल्कि समाज का आईना है। जब उसमें दरारें पड़ती हैं, तो समाज की छवि भी टूटती है। पुलिस के भीतर आपसी सहयोग, सम्मान और संवाद की संस्कृति को मजबूत करना बेहद आवश्यक है। अफसरों और अधीनस्थों के बीच संवाद की कमी ही सबसे बड़ा कारण बनती है मनोबल गिरने का।

राज्य के गृह मंत्रालय को चाहिए कि वह एक स्वतंत्र ₹पुलिस मानसिक स्वास्थ्य प्रकोष्ठ₹ स्थापित करे, जो केवल पुलिसकर्मियों की भावनात्मक और मानसिक स्थिति पर निगरानी रखे। साथ ही, विभाग के भीतर जवाबदेही तय हो कि कोई भी अफसर अपने अधीनस्थों पर अनावश्यक दबाव या अपमानजनक व्यवहार न करे। आज हरियाणा पुलिस एक ऐसे मोड़ पर खड़ी है जहाँ उसे अपने अस्तित्व और आदर्श दोनों को बचाना है। यह समय आत्ममंथन का है – कि आखिर कहाँ गलती हुई, किस बिंदु पर वह ह्यसेवा और सुरक्षाह्न से ह्यसंदेहास्पद मौतोंह्न तक पहुँच गई। राजनीतिक हस्तक्षेप, जातिवादी खींचतान, मीडिया ट्रायल और सोशल मीडिया के दबाव ने पहले ही खाकी की गरिमा को कमजोर किया है। अब जरूरत है उस आत्मविश्वास को लौटाने की जो कभी हरियाणा पुलिस की पहचान हुआ करता था।

सत्ता में बैठे लोगों को यह समझना होगा कि पुलिस केवल आदेश मानने वाली मशीन नहीं, बल्कि संवेदनशील मनुष्य हैं। जब तक उन्हें सम्मान, न्याय और सुरक्षा नहीं मिलेगी, तब तक कानून का शासन भी सुरक्षित नहीं रहेगा।

सारी दुनिया उदय होते सूर्य को पूजती है....मात्र बिहारी छठव्रती ही हैं.....जो अस्त होते सूर्य को भी पूजते हैं

छठ महापर्व बिहार और पूर्वांचल समेत पूरे विश्व में मनाया जाने वाला एक विशिष्ट महापर्व है। जिसके अंतर्गत भगवान सूर्य तथा प्रकृति के छठे स्वरूप माँ कात्यायनी की आराधना की जाती है । देखा जाए तो बिन सूर्य के प्रकृति की कल्पना ही निरर्थक साबित होगी। इसलिए प्रकृति के सलामती और। रक्षण हेतु श्रद्धा आस्था से परिपूर्ण छठ पर्व किया जाता है। छठ महापर्व का दृष्टिकोण बेहद वैज्ञानिक है ।हमारे पूर्वजों की सोच कितनी दिव्य थी वो इस छठ पर्व से ही सीखी जा सकती हैं। छठ महापर्व में सूर्य की आराधना का वैज्ञानिक कारण यह है कि बिना सूर्य के किसी भी जीव या वनस्पतियों को जीवित रहना बेहद कष्टदायक या असंभव कार्य होगा। बिन सूर्य की रौशनी के पेड़ पौधे अपना भोजन कैसे प्राप्त करेंगे?

जब वनस्पति पेड़ पौधे को रोशनी नहीं प्राप्त होगी तो वो हमें शाक सब्जी फल एवं सबसे मुख्य प्राण वायु ऑक्सीजन हमें कैसे प्रदान करेंग? इसलिए ही हिन्दू धर्म में अनादि काल से ही प्रकृति को देवता मानकर पूजने की शुरूआत की गई होगी।

अगर छठ महापर्व की उत्पति की चर्च करें तो ....

छठ महापर्व साल में दो बार मनाई जाती है और यह व्रत सतयुग किया जा रहा है।

एक कथा अनुसार राजा प्रियंमवद और रानी मालिनी जो संतान सुख से वंचित थे ।

जिसके कारण दोनों राजा रानी हर वक्त दुखी रहते थे, एकदिन कश्पय मुनि ने सलाह दिया हे राजन तुम संतान कामना हेतु यज्ञ करो।

कश्यप मुनि के निर्देशन में राजा प्रियंबद और रानी मालिनी ने विधि विधान यज्ञ किए ।

यज्ञ से है प्राप्त हुई खीर को ग्रहण किए जिसके फलस्वरूप राजा रानी को संतान सुख तो प्राप्त हुआ लेकिन पुत्र जन्म लेते ही मर गया था।

जिसके वियोग में राजा रानी नवजात शिशु के शव को लेकर जंगल में चल पड़े और अपने प्राणों त्यागने प्रण कर लिए तभी ब्रह्मा जी की मानस पुत्री देवसेना प्रकट हुई उन्होंने राजा प्रियंबद और रानी मालिनी के नवजात शिशु को जीवित कर दिया । राजा प्रियंबद और रानी मालिनी के हर्ष का ठिकाना ना रहा राजा रानी दोनों उनके चरणों में गिरकर पूछने लगे की ₹हे देवी आप कौन हैं₹। राजा रानी की ये बात सुनकर देवसेना ने कहा ...₹मै ब्रह्मा जी की मानस पुत्री देवसेना हूं ,मुझे ही कात्यायनी माता के नाम से भी जाना जाता है। मै प्रकृति की छठी स्वरूप से उत्पन्न हुई हूं ,जिसके कारण मुझे छठी मैया भी कहा जाता है। मै संतान की रक्षा करती हूं , आप जाओ और धरती पर सबको बताओ मेरे बारे ! राजा प्रियंबद और रानी मालिनी ने अपने पुत्र जीवित होने की खुशी में छठी मैया का धूम धाम से व्रत पूजन अर्चन अनुष्ठान किए ओर लोगों को करने का आदेश दिए। एक कथा अनुसार महाभारत काल में पांडव कौरव में युद्ध के समय द्रौपदी ने भी सूर्य पूजा या छठी मैया की पूजा की थी । त्रेता माँ सीता ने भी छठ व्रत किया था ऐसा शास्त्रों अध्ययन पर सुनने को मिलता है। महारथी कर्ण भी सूर्य की पूजा मनोयोग से करता था। छठ पर्व के विधि विधान की बात करें तो... सूर्यषष्ठी छठ पर्व साल में दो बार मनाई जाती है,...एक चैत्र मास में एक कार्तिक मास दोनों महीनों षष्ठी तिथि को ही मनाई जाती है। कार्तिक की छठी दिवाली के छठे दिन मनाई जाती है। छठ व्रत में पवित्रता का विशेष ध्यान रखा है.. व्रत को करने वाला एक दिन पहले लहसून प्याज आदि गरिष्ठ भोज्य को त्याग कर देता है। व्रती अपने घर विशेष रूप से स्वच्छ रखता है एक दिन पहले नदी या तालाब के घाट पर जाकर स्नान करके व्रत की शुरूआत करता है। एक दिन पहले नहाए खाए होता इस दिन सात्विक भोजन ग्रहण करता है व्रती । सुबह शाम जल में खड़ा रहकर सूर्य की उपासना की जाती है गंगा जी को दीप अर्पण की जाती है। व्रती शुद्ध ढंग से घर छठ का प्रसाद तैयार करते हैं। छठ माता का पसंदीदा प्रसाद ठेकुआ, खजूर ,खस्ता , पुआ अन्नास ,शरीफा ,पनियाला ,गंजी , सुथनी,केला सेब , अनार अंगूर ना,रियल ,पपीता, कद्दू ,लौकी , मूली , हल्दी अदरक, गन्ना साठी चिऊरा साठी चावल आदि छठआता के कुछ मुख्य प्रसादों में शामिल हैं। मौसम में मिलने सभी छठ माता के पूजन में शामिल किया जाता है। छठ के एक दिन पूर्व भी कुछ लोग व्रत रहते छोटी छठ को जिसमें शाम को गुड़ की खीर और रोटी का भोग लगाया जाता है ।लेकिन बड़ी छठ के व्रत में 24 घंटे निर्जल व्रत रहना होता है अगले दिन सूर्योदय के बाद अर्द्ध देने के बाद ही जल या अन्न ग्रहण किया जा है। छठ महापर्व की एक और विशेषता यह है ..... कि जहां समस्त संसार उदय होते सूर्य को है पूजता है ...वहीं हम भोजपुरिया बिहारी लोग छठ महापर्व में अस्त होते सूर्य को भी पूजते हैं । जो इस पर्व को अन्य पर्वों से विशिष्ट दर्जा प्रदान करता है। एक ओर जहां उदय होते सूर्य नई ऊर्जा तरकीय उन्नति की कामना करते हैं वरदान मांगते है। वहीं अस्त होते सूर्य को पूजने का कारण यह है कि इस प्रकृति प्रकृति में जो भी विद्यमान है उसका अस्त होना निश्चित है। किंतु अस्त होने वाले का उदय भी होता है ... यह संदेश छठ पर्व देता अर्थात अंत के बाद एक नई शुरूआत होती है। व्यक्ति को कभी भी अपने हार से घबराना नहीं चाहिए आज हार रहे हो तो ... कल विजय भी आप जरूर होगे ... हिम्मत नहीं हारना है। अर्थात छठ महापर्व हमें यह प्रेरणा देता है कि ...जिसका अंत होता है ...उसका उदय भी होता है.....और हर अंत एक नए उदय शुरूआत को जन्म देता है । जैसे आज सूर्य के अस्त होने बाद पुनः उदय भी होता है ऐसे ही जीवन में दुख है तो सुख भी आयेगा यह सीख हमें छठ पर्व हमें सीखना चाहिए । सच में ... हर अंत के बाद उदय भी होता यही प्रेरणा देती छठी मैया ,, और हम सभी भोजपुरिया संस्कृति की जनता और बिहारियों को गर्व करना चाहिए कि सारी दुनिया उगते हुए सूर्य को पूजती है तो...हम पूर्वांचली और बिहारी भाई , अस्त होते सूर्य को भी पूजते हैं जय छठी मैया सभी जन पर सदा सहाय बनो ।

नीरज कुमार सिंह
देवरियां

कुछ तो बात है जो हस्ती मिटती नहीं हमारी... !

देशसेवा में सबसे अग्रणी राष्ट्रीय स्तर का संगठन राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ 2025 में अपनी सौवीं जयंती अर्थात स्थापना का शताब्दी वर्ष मना रहा है । देश के प्रधानमंत्री नें आरएसएस के योगदान को ध्यान में रखकर शताब्दी जयंती प्रतीक सिक्का जारी किया था । संस्थापक डॉ हेडगेवार और गुरु गोलवलकर से मोहन भागवत तक का संघ आज किसी परिचय का मोहताज नहीं। इस संस्था के गर्भ से वीर सावरकर जैसे असंख्य राष्ट्रचिंतकों ने जन्म लिया है । करोड़ों या फिर सच कहें तो 194 करोड़ वर्ष पुरानी प्राचीनतम आर्य सभ्यता एवम्-संस्कृति की रक्षा के लिए संघ रूपी यह विराट वट वृक्ष सीना ताने यथावत खड़ा है । इसे मिटाने का अनगिनत प्रयास हुआ, आज भी एक बड़ा राजनीतिक वर्ग इस राष्ट्रभक्त संस्था को अपना दुश्मन मानती है क्यूंकि जो सनातन हिंदुत्व और भारत के खिलाफ खड़े होते है उनका सीधा सामना इस राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ नामक संगठन से होता है। जिन्हें अखण्ड आर्यावर्त की समझ है, जिन्हें भारतवर्ष की महान परंपराओं पर गर्व है वे जानते हैं कि संघ की यह चैतन्य धारा अभी अनंतकाल तक प्रवाहमान रहेगी । संघ के शताब्दी वर्ष में निश्चय ही संघ के मंचों से नव चिंतन सामने आएगा । स्वाधीनता आंदोलन में महात्मा गांधी बड़ा नाम था। स्वतन्त्रता आंदोलन का नेतृत्व इन्हीं के कदम ताल से प्रारंभ हुआ था पर कम लोग जानते है की उस आंदोलन की नींव संघ था जिसने आर्थिक, सामूहिक और वैचारिक रूप से महात्मा गाँधी को सबल दिया । स्वतंत्रा आंदोलन ह्युज की कांग्रेस ने नहीं , आंदोलनकारी संघ की विचारधारा ने प्रारंभ किया था । तब कांग्रेस एक सहयोगी संगठन थी पार्टी नहीं ।आजादी मिलने के बाद जब बापू को लगा कि कांग्रेस रूपी यह स्फूर्त आंदोलन अब एक राजनैतिक पार्टी में बदल जाएगा तो उन्होंने उसे भंग करने की सलाह दी थी । आज की कांग्रेस को देखकर समझ लीजिए कि बापू का अनुमान कितना सही था । यूपी प्रदेश मिडिया के पत्रकार पंकज सीबी मिश्रा नें शताब्दी वर्ष जयंती पर संघ को बधाई देते हुए कहा कि स्वतंत्रता आंदोलन विचारधाराओं की साझा विरासत है आर-एसएस । 1935 के बाद जब डॉ. हेडगेवार का स्वास्थ्य लगातार बिगड़ता रहा। क्रॉनिक बैकपेन नें उन्हें अस्वस्थ कर दिया लेकिन संघ के विस्तार के लिए उनका जुनून कम नहीं हुआ। वे धीरे-धीरे अपनी जिम्मेदारियां माधव सदाशिव गोलवलकर (गुरुजी) को सौंपने लगे, जो बाद में उनके उत्तराधिकारी बने ।अपनी बिगड़ती तबीयत के बावजूद, उन्होंने 1940 के वार्षिक संघ शिक्षा वर्ग में भाग लिया और अपना अंतिम संदेश स्वयंसेवकों को दिया था डॉ हेडगेवार नें और कहा था कि मैं आज अपनी आंखों के सामने संघ के अपने भगिनी और बंधुओ के रूप में एक लघु हिंदू राष्ट्र देख रहा हूं। 1943 की ब्रिटिश इंटेलीजेंस की रिपोर्ट में चिंता व्यक्त करते हुए लिखा गया : राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ तेजी से एक महत्वपूर्ण अखिल भारतीय संगठन बनने की दिशा में बढ़ रहा है जो इंग्लैंड इम्पीरियर के लिए अकाट्य चुनौती है ... उनके विकास का नया आयाम स्वतंत्रता के लिए गांवों में प्रवेश करने का प्रयास है। 21 जून 1940 में जब संघ के महान राष्ट्रनिमार्ता डॉ हेडगेवार ने नागपुर में अंतिम सांस ली तब कम्युनिस्टो और अंग्रेजो के लोगो को लगा कि यही माकूल समय है जब संघ को नेस्तनाबूत कर दिया जाय। हेडगेवार के निधन के समय संघ में लगभग एक लाख स्वयंसेवक और 700 शाखाएं थीं। जबकि 1930 में केवल 60 शाखाएं थीं जो 1936 में 200 हो गईं, 1939 में 500 और 1940 तक 700 पहुंच गईं। यह विस्तार दर प्रति वर्ष 70% से अधिक थी जो किसी भी राजनीतिक दल के लिए आज भी अकल्पनीय है !

संघ अपने संस्थापक को खोकर भी भटका नहीं और गुरुजी गोलवलकर के नेतृत्व में संघ का विस्तार पंजाब से तमिलनाडु तक और गुजरात से असम तक फैल गया ।ब्रिटिश गृह विभाग ने तब स्वयं स्वीकार किया कि संघ ने कानून का पूर्णतः पालन किया और अगस्त 1942 में होने वाली गड़बड़ियों (भारत छोड़ो आंदोलन) में भाग नहीं लिया। बॉम्बे सरकार की रिपोर्ट में स्पष्ट रूप से लिखा गया कि संघ ने सरकारी आदेशों का उल्लंघन नहीं किया। यह रणनीति इतनी सफल थी कि संघ तब भी प्रतिबंधित नहीं हुआ, जब कांग्रेस के सभी नेता जेल में बंद थे। लाहौर से 48 प्रचारक संघ में शामिल हुए, जिनमें 10 एमए, 2 डॉक्टर और 14 शास्त्री शामिल थे। जब 1939 में द्वितीय विश्वयुद्ध छिड़ा, तो गुरुजी गोलवलकर ने बेहद बुद्धिमानी से सभी सरकारी निदेशों का पूर्ण पालन किया। संघ के सैन्य अभ्यास तक बंद कर दिए गए ताकि संगठन को प्रतिबंधित होने से बचाया जा सके। 8 अगस्त 1942 को जब गांधी जी ने ₹करो या मरो₹ का नारा दिया, तो हजारों स्वयंसेवकों ने व्यक्तिगत तौर पर भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया। 9 अगस्त 1942 को गांधी जी के नेतृत्व में स्वतंत्रता के लिए उठी क्रांति के पहले दिन ही, अहमदाबाद में जनप्रदर्शन की अगुवाई करते हुए संघ ही सबसे आगे रहा ।

पंकज सीबी मिश्रा
जौनपुर यूपी

खुशियों की दीपावली : मन की अंधियारी दूर करने का समय

दीपावली वर्ष का वह पर्व है जो केवल अंधकार पर प्रकाश की विजय का प्रतीक नहीं, बल्कि मनुष्य के भीतर के तमस को मिटाकर आत्मिक प्रकाश जगाने का संदेश देता है। यह वह दिन है जब लोग घरों को सजाते हैं, दीपक जलाते हैं, नए वस्त्र पहनते हैं और मिठाइयाँ बाँटते हैं। परंतु क्या हमने कभी ठहरकर सोचा है कि असली दीपावली क्या केवल घर की सफाई और रोशनी से पूरी हो जाती है? क्या वास्तव में वह अंधकार, जिसके नाश के लिए यह पर्व मनाया जाता है, केवल दीवारों और आँगन में होता है या हमारे मन और व्यवहार में भी कहीं छिपा है?

आज का समाज बाहरी चमक में इतना उलझ गया है कि भीतर की रोशनी मद्धम पड़ती जा रही है। दीपावली अब अक्सर दिखावे, खर्च और प्रतिस्पर्धा का उत्सव बनती जा रही है। लोग इस दिन अपने घर को हजारों लाइटों से सजा देते हैं, लेकिन अपने मन के कोनों में बसे अंधकार – ईर्ष्या, अहंकार, असंतोष और असहनशीलता – को नजरअंदाज कर देते हैं। त्योहार का असली उद्देश्य यही था कि हम अपने भीतर झाँकें, संबंधों को सहेजें और अपने चारों ओर स्नेह की रोशनी फैलाएं। मगर आज यह भावना बाजार और भौतिकता के शोर में खोती जा रही है।

दीपावली केवल लक्ष्मी के आगमन का नहीं बल्कि आत्ममंथन का भी समय है। जब हम घर के हर कोने की धूल झाड़ते हैं, तो दरअसल हमें अपने मन की धूल भी झाड़नी चाहिए – पुरानी शिकायतें, मतभेद, कटुता और तनाव। हर दीपक यह याद दिलाता है कि अंधकार मिटाने के लिए केवल एक दीप ही काफी होता है, बशर्ते वह सच्चे मन से जलाया गया हो। परिवार में एक छोटी सी मुस्कान, एक क्षमा का भाव, एक प्रेमपूर्ण संवाद – यही वे दीप हैं जो रिश्तों के कोनों को रोशन करते हैं।

आज के दौर में यह पर्व मानसिक स्वास्थ्य के संदर्भ में भी बहुत मायने रखता है। तेज भागदौड़, सामाजिक दबाव, कामकाजी तनाव और डिजिटल दुनिया की भागमभाग में इंसान भीतर से खाली होता जा रहा है। त्यौहारों को भी हमने एक ह्लइवेंटह्व बना दिया है – फोटोशूट, सोशल मीडिया पोस्ट और महंगे तोहफों की परंपरा ने उसकी आत्मा को कमजोर कर दिया है। हमें यह याद रखना होगा कि दीपावली का आनंद केवल बाहरी सजावट में नहीं, बल्कि उस मानसिक सुकून में है जो हमें अपनेपन, संवाद और आत्मीयता से मिलता है।

आजकल के बच्चे और युवा पटाखों की चमक में खुशियाँ ढूंढते हैं। लेकिन क्या हमें यह अधिकार है कि अपनी खुशी के लिए पर्यावरण को प्रदूषित करें? धुएं और शोर से भरी हवा में सांस लेता हर जीव, हर बच्चा और हर बुजुर्ग इस खुशी की कीमत चुका रहा है। असली आनंद तो तब है जब हमारे दीपक किसी को कष्ट न दें। जब हम धरती माँ के प्रति भी उतने ही संवेदनशील हों जितने अपने घर के प्रति। पर्यावरण के अनुकूल दीपावली मनाना अब केवल विकल्प नहीं, जिम्मेदारी बन चुकी है। मिट्टी के दीप, प्राकृतिक रंगों की सजावट और स्थानीय उत्पादों का उपयोग करके भी हम इस पर्व को सुंदर बना सकते हैं – और यह सौंदर्य कृत्रिम रोशनी से कहीं अधिक स्थायी है।

दीपावली के अवसर पर एक और अंधकार मिटाने की आवश्यकता है – वह है अकेलेपन और मानसिक बेचैनी का अंधकार। त्योहार का मौसम बहुतों के लिए उत्सव का होता है, लेकिन कुछ लोगों के लिए यह यादों और उदासी का समय भी होता है। जिनके अपने दूर हैं, जो किसी प्रिय को खो चुके हैं, या जो आर्थिक और सामाजिक संघर्षों से जूझ रहे हैं – उनके लिए यह रोशनी कई बार चुभन का कारण बनती है। ऐसे में समाज का कर्तव्य है कि वह अपने आसपास के ऐसे लोगों को भी इस रोशनी में शामिल करे। दीपावली का असली अर्थ तभी पूर्ण होगा जब किसी के घर का अंधकार भी हमारे दीप से दूर हो।

हमारे शास्त्र कहते हैं – तमसो मा ज्योतिर्गमय – यानी हमें अंधकार से प्रकाश की ओर जाना चाहिए। यह प्रकाश केवल दीपक का नहीं बल्कि ज्ञान, विवेक और करुणा का है। जब मन में करुणा का प्रकाश जलता है, तो वह हजारों दीपकों से अधिक उजाला फैलाता है। दीपावली हमें यही सिखाती है कि जीवन में प्रकाश फैलाना केवल दिए जलाने का नहीं, बल्कि दया, सत्य और प्रेम की राह पर चलने का प्रतीक है।

त्योहारों का मकसद केवल परंपरा निभाना नहीं होता। वे हमें रुककर सोचने का अवसर देते हैं कि हम किस दिशा में जा रहे हैं। दीपावली हमें याद दिलाती है कि जो प्रकाश बाहर है, वह तभी स्थायी होगा जब भीतर भी उजाला हो। जब हम अपने भीतर के राम को जगाते हैं और रावण रूपी अहंकार, द्वेष और लालच को जलाते हैं, तभी सच्ची दीपावली मनती है।

आज के समय में यह भी जरूरी है कि हम दीपावली को ह्लसमावेशिता का पर्वह्व बनाएं। समाज में विभाजन की दीवारें, जाति-धर्म के मतभेद, आर्थिक असमानता – ये सब हमारे युग के अंधकार हैं। अगर हर व्यक्ति अपने स्तर पर थोड़ा सा प्रकाश फैला सके – किसी गरीब को भोजन दे दे, किसी बच्चे की शिक्षा में सहयोग करे, किसी बीमार को सहारा दे – तो वही दीपावली सबसे उज्ज्वल होगी। असली लक्ष्मी वही है जो करुणा, दया और सेवा के रूप में घर में प्रवेश करे।

दीपावली व्यापार का भी पर्व मानी जाती है। यह समय होता है जब बाजारों में रौनक रहती है, कारोबारियों की आशाएं बढ़ती हैं। लेकिन व्यापारी समुदाय को भी यह नहीं भूलना चाहिए कि सच्चा लाभ केवल आर्थिक नहीं, नैतिक भी होता है। ईमानदारी, पारदर्शिता और ग्राहक के प्रति सम्मान ही वह पूंजी है जो लंबे समय तक टिकती है। जब बाजार में विश्वास का दीप जलेगा, तभी समाज समृद्ध होगा।

हमारी संस्कृति में यह भी कहा गया है कि ह्लदीपावली केवल संपन्नता का नहीं, संयम का भी प्रतीक है ह्व इसलिए अत्यधिक उपभोग, दिखावा और प्रतिस्पर्धा से बचना ही सच्ची श्रद्धा है। यह पर्व हमें सिखाता है कि ह्लथोड़े में भी बहुतह्व कैसे पाया जा सकता है। जिस घर में प्रेम, संतोष और एकता है, वहाँ हर दिन दीपावली है।

आज जरूरत है कि हम दीपावली को एक आध्यात्मिक और सामाजिक आंदोलन के रूप में देखें। हर व्यक्ति अपने जीवन में एक संकल्प ले – कि वह किसी न किसी रूप में प्रकाश फैलाएगा। कोई ज्ञान के दीप जलाएगा, कोई सहायता का, कोई प्रेम का। जब हर व्यक्ति एक दीप बनेगा, तो समाज में ऐसा उजाला फैलेगा जिसे कोई अंधकार मिटा नहीं सकेगा।

कभी-कभी यह भी आवश्यक है कि हम इस पर्व को कुछ पल की शांति के साथ मनाएँ। आत्मचिंतन के कुछ क्षण, अपने प्रियजनों के साथ समय बिताना, और अपनी उपलब्धियों व कमियों पर विचार करना भी दीपावली का हिस्सा होना चाहिए। जब हम अपने भीतर के दीप से मार्ग रोशन करते हैं, तो जीवन में दिशा स्पष्ट होती है।

दीपावली का अर्थ केवल 'दीप' नहीं, 'आवली' अर्थात श्रृंखला भी है। यह श्रृंखला बताती है कि प्रकाश एक से दूसरे तक पहुँचता है। यही मानवता का मूल संदेश है – एक दीप दूसरे को जलाए, एक दिल दूसरे को रोशन करे। तभी यह संसार अंधकार से मुक्त हो सकेगा।

दीपावली केवल दीप जलाने का पर्व नहीं, बल्कि मन के अंधकार को मिटाने और आत्मा में उजाला भरने का अवसर है। आज यह जरूरी है कि हम इसे दिखावे या प्रदूषण का उत्सव न बनाएं, बल्कि सादगी, करुणा और प्रेम का पर्व बनाएं। जब हम दूसरों के जीवन में रोशनी बाँटते हैं, तभी सच्चा सुख और सुकून प्राप्त होता है। दीपावली का असली अर्थ है – हर मन में शांति, हर घर में प्रेम और हर समाज में समरसता का प्रकाश।

अंततः, इस दीपावली पर हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम केवल अपने घर को नहीं, बल्कि अपने विचारों, व्यवहारों और समाज को भी प्रकाशित करेंगे। शोर और प्रदूषण से दूर, सरलता और स्नेह से भरी दीपावली ही सच्चे अर्थों में ह्लखुशियों और सुकून की दीपावलीह्व होगी। यही दीपक भारत की संस्कृति का प्रतीक बनेगा – जहाँ रोशनी केवल बिजली से नहीं, बल्कि इंसानियत से फैलती है।

-प्रियंका सौरभ

आखिर गठबंधन की 'गदहपचीसी' में कबतक उलझा रहेगा बिहार?

सिद्धांत विहीन गठबंधन की राजनीति से किसी भी जीवंत लोकतंत्र का कदापि भला नहीं हो सकता है। बिहार इसका दिलचस्प उदाहरण बन चुका है। यहां पर नीति और नियम दोनों का माखौल उड़ाया जा रहा है। चाहे एनडीए हो या इंडिया महागठबंधन (पूर्व नाम यूपीए), दोनों जगहों पर टिकट बंटवारे में जितनी सिरफुटौव्वल दिखाई पड़ी, उससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि यदि मतदाताओं ने समझदारी नहीं दिखाई तो 14 नवम्बर से सरकार बनाने के लिए हॉर्स ट्रेडिंग होना तय है।

सच कहूं तो इस फजीहत भरी सियासी स्थिति के लिए भाजपा और कांग्रेस का केंद्रीय नेतृत्व भी कम जिम्मेदार नहीं है, क्योंकि उनके बीच बारहों मास चलते रहने वाले शह और मात के अनैतिक खेल से उनके क्षेत्रीय सहयोगियों के इकबाल बुलंद रहते हैं। यह कहना गलत नहीं होगा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व वाली जदयू और पूर्व उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव (सुपुत्र पूर्व मुख्यमंत्रीद्वय लालू यादव व राबड़ी देवी) तो महज इनके हथकंडे मात्र हैं।

लेकिन कभी एक-दूसरे की सियासी उन्नति की सहायक रहे नीतीश कुमार और लालू यादव इतने सजग रहते हैं कि इन्होंने एक-दूसरे का प्रबल विरोधी रहने के बावजूद दो-दो बार आपस में हाथ मिलाने में कोई हिचकिचाहट नहीं दिखाई। इन्होंने भाजपा-कांग्रेस की सियासी तिकड़मों को बिहार में कभी सफल नहीं होने दिया। खास बात यह कि बिहार विधानसभा चुनाव 2025 के टिकट बंटवारे से पहले भी इन्होंने यानी जदयू ने भाजपा को और राजद ने कांग्रेस को, उनके गठबंधन सहयोगियों को उकसाकर जो गुप्त सियासी खेल खेला है, उससे राजनीतिक विश्लेषकों का भी दंग रह जाना स्वाभाविक है। जदयू का यह कहना कि लोजपा आर, हम और रालोमो को भाजपा मैनेज करे, यह एक गहरी सियासी चाल है! वहीं तेजस्वी यादव के परोक्ष इशारे पर वीवीआईपी प्रमुख मुकेश सहनी द्वारा कांग्रेस पर तंज कसना और कांग्रेस को पिछली बार से भी कम सीटें ऑफर करना, साथ ही भाकपा माले द्वारा अधिक सीटों की मांग करना यह जाहिर करता है कि राजद अपने सहयोगियों को सीट बंटवारे के दौरान इतना कमजोर रखना चाहता है कि कि चुनाव परिणाम आने के बाद भी इनकी मोलभाव की ताकत कम रहे। यही पेंच जदयू की भी है, लेकिन भाजपा ने उसे 122 से 101 तक झुकाकर अपनी बढ़त बना ली है।

इस बात में कोई दो राय नहीं कि गठबंधन की बुनियाद पर लड़े जा रहे चुनाव में पहली और बड़ी चुनौती यही रहती है कि गठबंधन के भीतर किस तरह से सहयोगी दलों की राजनीतिक महत्वाकांक्षा और जमीनी हकीकत के बीच तालमेल बिठाया जाए यानी कि सही संतुलन साधा जाए। इस नजरिए से बिहार विधानसभा चुनाव में एनडीए ने सहयोगियों के बीच सीटों की संख्या के बंटवारे की गुत्थी पहले ही सुलझ-ाकर शुरूआती बढ़त हासिल कर ली है, लेकिन सीटों के बंटवारे का असली पेंच यहां भी खबर लिखे जाने तक फंसा हुआ है।

सियासी टिप्पणीकारों की मानें तो बिहार में राजग या महागठबंधन के 2020 के मुकाबले 2025 में गठबंधनों के बाहर ही नहीं, बल्कि भीतर भी समीकरण बदल चुके हैं, जिसका तीखा असर सीट शेयरिंग पर भी दिख रहा है। एनडीए में जदयू और बीजेपी बराबर-बराबर सीटों पर मैदान में हैं, जबकि बाकी दलों को उनकी मांग से काफी कम सीटों पर ही संतोष करना पड़ा है। जिससे वे लोग बाहर से खुश और अंदर से नाखुश हैं। उनकी सियासी कविताएं इसी बात की चुगली करती हैं। हालांकि गठबंधन के लिए अच्छी बात यह होगी कि किसी सहयोगी दल ने खुलेआम नाखुशी जाहिर नहीं की है, क्योंकि अब में निर्विकल्प हो चुके हैं। जानकारों की मानें तो बिहार विधानसभा चुनाव 2025 मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के सामने एक नहीं बल्कि कई चुनौतियां लेकर आया है। भले ही वृद्ध हठ के अनुरूप इस चुनाव में भी राजग का चेहरा नीतीश कुमार ही हैं, लेकिन बड़े भाई वाली उनकी पार्टी की भूमिका अब बराबर वाली हो चुकी है। पिछले दो दशकों से यही कहानी रही है कि उनके साथ में भाजपा रही हो या राजद, सीटें कम आई हों या ज्यादा -नीतीश कुमार ही मुख्यमंत्री बने। बीच में कुछ समय के लिए जीतन राम मांझी को मुख्यमंत्री उन्होंने ही बनवाया था। इसप्रकार वर्ष 2005 से ही वह मुख्यमंत्री पद पर बने हुए हैं। हालांकि इस चुनाव में उनकी राह आसान नहीं लग रही है, क्योंकि भाजपा, लोजपा आर, हम और रालोमो का दबाव उनपर है। वहीं, कानून-व्यवस्था को चुनौती देते अपराधियों की टीम और उनके सहयोगियों पर लगे भ्रष्टाचार के आरोपों ने उनकी सुशासन बाबू वाली छवि को गहरी चोट पहुंचाई है। हालांकि मोदी नाम केवलम के दम पर तो उनकी चुनावी नैया पार लग जाएगी। लेकिन यह देखना दिलचस्प होगा कि पिछली बार की तरह अगर इस बार भी उन्हें भाजपा से कम सीटें मिलती हैं, तब भी क्या सीएम की कुर्सी पर उनका दावा बना रहेगा या फिर चुनाव बाद कोई नया राजनीतिक खेल शुरू होगा।

वहीं, राजद की मुश्किल अलग प्रकार की है। कहा जा रहा है कि एनडीए ने जिस फॉम्युर्ले को समय रहते ही सुलझा लिया, उसी फॉमूर्ले तक पहुंचने में महागठबंधन को अभी काफी पापड़ बेलने पड़ेंगे और कांग्रेस आलाकमान की कठिन परीक्षा से उन्हें गुजरना है। क्योंकि इस बार कांग्रेस ने बिहार में पहले से भी अधिक सीटों की आस लगाई है। जबकि राजद के लिए उसे मानना और साथ में दूसरे सहयोगियों से तालमेल बैठाना काफी मुश्किल हो सकता है। ऐसा उनकी परस्पर विरोधाभासी बयानबाजियों से पता चलता है। कोढ़ में खाज यह कि इस बीच आईआर-सीटीसी होटल भ्रष्टाचार (करप्शन) केस में पूर्व रेल मंत्री लालू प्रसाद यादव, पूर्व मुख्यमंत्री राबड़ी देवी और पूर्व उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव के खिलाफ आरोप तय होने से भी तीनों नेताओं की परेशानी बढ़ी है और आगे भी ज्यादा बढ़ सकती है। चूंकि तेजस्वी यादव ने अपने चुनावी अभियान में भ्रष्टाचार और रोजगार जैसे अहम मुद्दे उठाए हैं। लेकिन ऐन चुनाव के पहले भ्रष्टाचार के मुकदमे (करप्शन केस) के आगे बढ़ने से उनके विरोधी दलों को एक और बड़ा मौका मिल गया है और भाजपा ने तो इसकी आक्रामक शुरूआत भी कर दी है। उधर, सुप्रसिद्ध चुनावी रणनीतिकार प्रशांत किशोर की नवस्थापित पार्टी जनसुराज का एंगल भी राजग और महागठबंधन की सियासी महत्वाकांक्षाओं में सियासी पलीता लगा सकता है, क्योंकि प्रशांत किशोर की पार्टी जनसुराज ने भी उम्मीदवारों का ताबड़तोड़ ऐलान शुरू कर दिया है। इससे कहीं एनडीए को तो कहीं महागठबंधन को तगड़ा घाटा होगा, क्योंकि इस पार्टी की ओर से अब तक की जारी लिस्ट में जातिगत समीकरणों का पूरा पूरा ख्याल रखा गया है।

यूपी की राज्यपाल महिलाओं, बच्चों की बदहाली पर चुप क्यों?

उत्तर प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने लिव-इन रिलेशनशिप को लेकर एक बार फिर चौंकाने वाला बयान दिया है। उन्होंने महिलाओं और छात्राओं को चेतावनी दी कि अगर सावधानी नहीं बरती गई तो परिणाम भयावह हो सकते हैं। पटेल का कहना है कि दूर रहें, वरना आप 50 टुकड़ों में मिलेंगी। यह टिप्पणी उनके पिछले दावे के ठीक अगले दिन आई, जिसमें उन्होंने कहा था कि लिव-इन रिलेशनशिप का असर देखने के लिए किसी अनाथालय में जाना चाहिए, जहाँ 15 साल की लड़कियाँ अपने बच्चों के साथ कतार में खड़ी होती हैं। राज्यपाल ने विश्वविद्यालयों और न्यायाधीशों के साथ बैठक में भी छात्रों को लिव-इन रिलेशनशिप से बचाने के उपाय सुझाए थे। राज्यपाल पटेल का यह बयान निश्चित तौर पर युवतियों को जागरुक करने वाला और लिव इन रिलेशनशिप के खतरों से आगाह करने वाला है। सवाल यही है कि क्या उत्तर प्रदेश की युवतियों और महिलाओं के समक्ष यही एक खतरा है। उत्तर प्रदेश की राज्यपाल ने महिलाओं से जुड़े सिर्फ एक खतरे के सावचेत रहने की सीख दी है। लिव इन रिलेशनशिप के नकारात्मक पहलू हैं जरूर, लेकिन इस चलन अभी व्यापक रूप से नहीं है। महिला राज्यपाल उत्तर प्रदेश में महिलाओं से जुड़े अन्य खतरों को अनदेखा कर गई, क्योंकि शायद वहां भाजपा की सरकार है। अन्य खतरे लिव इन रिलेनशिप से कहीं ज्यादा गंभीर है। इनका निदान भी सरकार के लिए आसान नहीं है। राज्यपाल ने कभी इन खतरों का जिक्र तक नहीं किया।

सवाल यही है कि क्या उत्तर प्रदेश की युवतियों और महिलाओं के समक्ष यही एक खतरा है। उत्तर प्रदेश की राज्यपाल ने महिलाओं से जुड़े सिर्फ एक खतरे के सावचेत रहने की सीख दी है। लिव इन रिलेशनशिप के नकारात्मक पहलू हैं जरूर, लेकिन इस चलन अभी व्यापक रूप से नहीं है। महिला राज्यपाल उत्तर प्रदेश में महिलाओं से जुड़े अन्य खतरों को अनदेखा कर गई, क्योंकि शायद वहां भाजपा की सरकार है। अन्य खतरे लिव इन रिलेनशिप से कहीं ज्यादा गंभीर है। इनका निदान भी सरकार के लिए आसान नहीं है। राज्यपाल ने कभी इन खतरों का जिक्र तक नहीं किया।

राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के आंकड़ों के मुताबिक वर्ष 2023 में महिलाओं के खिलाफ अपराध के कुल 4,48,211 मामले दर्ज किए गए। इनमें उत्तर प्रदेश में सबसे अधिक 66,381 मामले, उसके बाद महाराष्ट्र में 47,101 और राजस्थान में 45,450 मामले दर्ज किए गए। इन तीनों राज्यों में से महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश में वर्ष 2023 में भी भाजपा की सरकारें थी। ऐसे में भाजपा महिला अपराधों की जिम्मेदारी से भाग नहीं सकती। महिलाओं से जुड़े साइबर अपराधों में लखनऊ का देश में चौथा स्थान है, जिसमें अश्लील फोटो-वीडियो और फेक कंटेंट जैसे मामले शामिल हैं। इस श्रेणी में लखनऊ से आगे बैंगलुरु, हैदराबाद और दिल्ली हैं। उत्तर प्रदेश जहां महिला अपराधों में अग्रणी है, वहीं महिलाओं और बच्चों के अन्य मामलों में पिछड़ा हुआ है। देश के 13 राज्यों और एक केंद्र शासित प्रदेश के 63 जिलों में 50 फीसदी से अधिक बच्चे आंगनवाड़ियों में नामांकित हैं और कुपोषित पाए गए हैं, जिनमें से 34 जिले अकेले उत्तर प्रदेश के हैं। महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के जून 2025 के पोषण ट्रैकर के अनुसार महाराष्ट्र, झारखंड, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और असम के कुछ जिले सबसे ज्यादा प्रभावित हैं। उत्तर प्रदेश में सबसे ज्यादा 34 जिले ऐसे हैं जहां बच्चों में कुपोषण की दर 50 फीसदी से अधिक है। इसके बाद मध्य प्रदेश, झारखंड, बिहार और असम का स्थान है।

केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा जारी वार्षिक स्वास्थ्य रिपोर्ट (2024-25) के अनुसार, विगत वर्षों में सुधार के बावजूद उत्तर प्रदेश भारत में सबसे अधिक बाल मृत्यु दर वाले राज्यों में शामिल है। रिपोर्ट के अनुसार उत्तर प्रदेश में प्रत्येक 1,000 बच्चों में से 43 बच्चे अपने पाँचवें जन्मदिन से पहले मर जाते हैं। वर्तमान शिशु मृत्यु दर (आईएमआर) 1,000 जीवित जन्मों पर 38 है, जबकि नवजात मृत्यु दर(आईएमआर) 28 है। यूनिसेफ इंडिया रिपोर्ट 2020 के अनुसार लगभग 46% मातृ मृत्यु और 40% नवजात मृत्यु प्रसव के दौरान या जन्म के बाद पहले 24 घंटों के भीतर हो जाती हैं।

उत्तर प्रदेश में स्कूलों में 21.83 लाख नामांकन पिछले साल की तुलना में कम हुए, जबकि बिहार में 6.14 लाख, राजस्थान में 5.63 लाख और पश्चिम बंगाल 4.01 लाख नामांकन कम हुए हैं। उत्तर प्रदेश में मील कवरेज में 5.41 लाख छात्रों की कमी आई। यूनिफाइड डिस्ट्रिक्ट इन्फॉर्मेशन सिस्टम फॉर एजुकेशन (यूडीआइएसई) की वर्ष 2023-24 की रिपोर्ट के अनुसार, उत्तर प्रदेश के 18 प्रतिशत सरकारी स्कूलों, अर्थात लगभग 27,000 स्कूलों के भवन जर्जर स्थिति में हैं। इनमें से कई स्कूलों की छतें और दीवारें खतरनाक स्थिति में हैं। लखनऊ में प्राथमिक विद्यालय और नसीराबाद में छत का प्लास्टर गिरने से दो बच्चे घायल हो गये। नोएडा और गोरखपुर के इलाकों से भी ऐसी ही घटनाएँ सामने आ चुकी हैं।

एनुअल स्टेटस ऑफ एजुकेशन (एएसईआर) 2024 की रिपोर्ट बताती है कि उत्तर प्रदेश के 22 प्रतिशत सरकारी स्कूलों में कार्यशील शौचालय ही उपलब्ध नहीं हैं और 35 प्रतिशत स्कूलों में लड़कियों के लिए अलग शौचालय नहीं हैं। लगभग 40 प्रतिशत विद्यालयों में तो नियमित स्वच्छता व्यवस्था ही नहीं है। ग्रामीण क्षेत्रों में यह समस्या और गम्भीर है, जहाँ शौचालयों की कमी के कारण लड़कियों की ड्रॉपआउट दर में 10-12 प्रतिशत की वृद्धि देखी गयी है। शिक्षा मंत्रालय की 2024-25 की रिपोर्ट के अनुसार, उत्तर प्रदेश के 28 प्रतिशत सरकारी स्कूलों में पेयजल की सुविधा नहीं है और 40 प्रतिशत स्कूलों में बिजली कनेक्शन उपलब्ध नहीं है। आश्चर्य यह है कि राज्यपाल आनंदी बेन ने उत्तर प्रदेश में महिलाओं और बच्चों से जुड़े इन मुद्दों का कभी जिक्र तक नहीं किया। बेहतर होता कि जिस तरह राज्यपाल पटेल ने लिव इन रिलेशनशिप से युवतियों को आगाह किया, उसी तरह योगी सरकार को भी आगाह करती तो शायद उत्तर प्रदेश में महिलाओं की मौजूदा हालत बेहतर हो सकती थी।

महाराष्ट्र और जम्मू कश्मीर के बाद बिहार: राहुल गांधी इंडिया गठबंधन को संभाल क्यों नहीं पा रहे हैं?

2024 के लोकसभा चुनाव में सहयोगी दलों की मदद से कांग्रेस पार्टी ने बीजेपी को कड़ी टक्कर दी। तत्कालीन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से लड़ने के लिए राहुल गांधी ने उस यूपीए के नाम को भी त्याग दिया जिसके बैनर तले कांग्रेस ने वर्ष 2004 से 2014 तक देश में राज किया था। लोकसभा चुनाव से पहले यूपीए की जगह पर राहुल गांधी ने सहयोगी दलों के साथ मिलकर एक नया मोर्चा बनाया जिसे इंडिया गठबंधन का नाम दिया गया।

लोकसभा चुनाव के नतीजों के बाद सहयोगी दलों के समर्थन के बल पर नरेंद्र मोदी लगातार तीसरी बार देश के प्रधानमंत्री तो बन गए लेकिन भारत के लोकतांत्रिक इतिहास में पहली बार विपक्षी गठबंधन को इतनी ज्यादा सीटें दिलाने का श्रेय लेकर कांग्रेस ने राहुल गांधी को सर्वमान्य नेता के तौर पर स्थापित करने का प्रयास किया। कुछ हद तक कांग्रेस को अपने इस अभियान में कामयाबी मिलती भी दिखाई दी। वोट चोरी का अभियान चला कर और बिहार में वोटर अधिकार यात्रा निकाल कर राहुल गांधी अपने आपको विपक्षी इंडिया गठबंधन के नेता के तौर पर स्थापित करने में थोड़े बहुत कामयाब होते भी दिखाई दिए।

उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री एवं सपा मुखिया अखिलेश यादव से लेकर तमिलनाडु के वर्तमान मुख्यमंत्री एवं डीएमके सुप्रीमो स्टालिन तक से उनके व्यक्तिगत संबंध मजबूत होते नजर आए।

जम्मू कश्मीर में भी विधानसभा चुनाव जीतने में राहुल गांधी और नेशनल कांफ्रेंस नेता उमर अब्दुल्ला की व्यक्तिगत केमिस्ट्री का जबरदस्त योगदान माना जाता है।

बिहार के पूर्व उपमुख्यमंत्री और आरजेडी नेता तेजस्वी यादव ने तो खुलकर राहुल गांधी को इंडिया गठबंधन की तरफ से प्रधानमंत्री पद के लिए उम्मीदवार तक बता दिया।

लेकिन इन सबके बावजूद अचानक देश की राजनीति तेजी से बदलती हुई नजर आने लगी है। जम्मू कश्मीर में राज्यसभा सीट और विधानसभा चुनाव को लेकर कांग्रेस और नेशनल कांफ्रेंस आमने-सामने आ गए है। जम्मू कश्मीर से राज्यसभा सांसदों के लिए होने वाले चुनाव में उमर अब्दुल्ला की पार्टी ने तीनों सेफ सीट पर अपने उम्मीदवार उतार दिए हैं और कांग्रेस को जो चौथी सीट ऑफर की है, उसे जीतना बहुत मुश्किल है। कांग्रेस पहले से ही इसे लेकर अपने सहयोगी दल से नाराज चल रही है वहीं अब विधानसभा की जिन 2 सीटों पर उपचुनाव होना है, उसे लेकर भी मामला फंसता हुआ ही नजर आ रहा है। राज्य में विधानसभा की 2 सीटों- बडगाम और नगरोटा में 11 नवंबर को चुनाव होना है। जम्मू कश्मीर प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष तारिक हामिद कर्रा ने उमर अब्दुल्ला की पार्टी पर गठबंधन के सिद्धांतों का अनादर करने का आरोप लगाते हुए कहा है कि वह राज्यसभा की एक सेफ सीट देने के अपने वादे से मुकर गई। कांग्रेस ने गठबंधन धर्म की याद दिलाते हुए सख्त शब्दों में चेतावनी देते हुए कहा है कि या तो नेशनल कांफ्रेंस उन्हें विधानसभा की एक सीट दे या फिर कांग्रेस दोनों ही सीटों पर अपने उम्मीदवार उतार देगी।

महाराष्ट्र में भी विधानसभा चुनाव के समय से ही शुरू हुई खटास कम होने का नाम नहीं ले रही है। जम्मू कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद मोदी सरकार द्वारा चलाए गए ऑपरेशन सिंदूर और दुनिया भर में भेजे गए सांसदों के प्रतिनिधिमंडल को लेकर एनसीपी और कांग्रेस के सुर अलग-अलग तो नजर आए ही। प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री के जेल जाने के बाद इस्तीफे की बाध्यता वाले बिल पर गठित की जाने वाली जेपीसी में शामिल नहीं होने को लेकर भी कांग्रेस इंडिया गठबंधन में शामिल सहयोगी दलों को अपने साथ ला पाने में नाकामयाब होती नजर आ रही है।

वहीं बिहार का मामला तो राहुल गांधी के नेतृत्व की स्वीकार्यता को लेकर सबसे बड़ा झटका साबित होता हुआ नजर आ रहा है। एक तरफ आरजेडी है जिसके नेता तेजस्वी यादव ने खुल कर राहुल गांधी की प्रधानमंत्री पद की दावेदारी का समर्थन कर दिया है तो वहीं दूसरी तरफ राहुल गांधी है जो लगातार पूछे जाने के बावजूद भी तेजस्वी यादव को मुख्यमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित नहीं कर रहे हैं। जबकि राजनीतिक सच्चाई तो यही है कि बिहार में विपक्षी गठबंधन में आरजेडी सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी है। कांग्रेस और आरजेडी में सीटों के बंटवारे को लेकर भी घमासान मचा हुआ है।

सहयोगी दलों के साथ कांग्रेस की यह खींचतान और महत्वपूर्ण मौकों पर राहुल गांधी की गैरमौजूदगी उनके नेतृत्व पर ही सवालिया निशान लगाती नजर आती है। पता नहीं राहुल गांधी इस तथ्य को समझ पा रहे हैं या नहीं और इससे भी बड़ा सवाल यह कि आखिर राहुल गांधी को इस तरह की सलाह कौन देता है कि उन्हें दिल्ली में होने के बावजूद तेजस्वी यादव से मुलाकात नहीं करनी चाहिए। केसी वेणुगोपाल और तेजस्वी यादव की जगह पर अगर राहुल सीधे तेजस्वी के साथ बैठकर बात करते तो शायद मामला इतना उलझता नहीं।

इस्राइल-हमास युद्धविराम: आशा की किरण या अस्थायी विराम?

गाजा की धरती लम्बे दौर से संघर्ष, हिंसा, विनाश और तबाही की त्रासदी की गवाह रही है, आज फिर एक ऐसे मोड़ पर खड़ी है जहाँ शांति की एक हल्की किरण दिखाई तो देती है, परंतु उसके चारों ओर धुएँ और राख का अंधकार अब भी विद्यमान है। हाल ही में हुए युद्ध-विराम ने न केवल मध्यपूर्व बल्कि समूचे विश्व को राहत की एक साँस दी है। गाजा में अमन-चैन की ओर जो सुखद कदम बढ़े हैं, उनका स्वागत होना चाहिए। परंतु यह सवाल भी उतना ही प्रासंगिक है कि क्या यह शांति स्थायी होगी, या यह केवल अगली लड़ाई से पहले का ठहराव भर है? समूची दुनिया चाहती है कि यह युद्ध विराम स्थायी हो क्योंकि इस्राइल और हमास के संघर्ष ने करीब बाइस लाख से अधिक लोगों को बेघर करके भुखमरी के कगार पर पहुंचा दिया है। ऐसे में दोनों पक्षों के लिये समझौते के पहले चरण को पूरी तरह से लागू करना बेहद जरूरी होगा। जिसमें बंधकों व कैदियों की रिहाई, गाजा में मानवीय सहायता को अनवरत जारी रखना और इस्राइली सेनाओं की गाजा के मुख्य शहरों से आंशिक वापसी सुनिश्चित करना भी शामिल है। यह सब दूसरे चरण की बातचीत पर निर्भर हैं।

यदि सब कुछ ठीक-ठाक रहा तो इसके बाद ही दूसरे चरण की बातचीत की प्रक्रिया शुरू हो सकती है। यह बेहद मुश्किल चुनौतियों वाला चरण होगा। इस दौरान कई संवेदनशील मुद्दे सामने होंगे। सबकी निगाह इस पर होगी कि शांति समझौते के अगले चरण कब पूरे होते हैं और वे सही तरह पूरे होते भी हैं या नहीं? इस पर संशय इसलिए है, क्योंकि यह स्पष्ट नहीं कि इजरायली सेना गाजा में कितना पीछे हटेगी और वहां के प्रशासन को संचालित करने का कैसा तंत्र तैयार होगा और क्या उस पर हमास सहमत होगा? इसके अतिरिक्त जहां हमास को हथियार छोड़ने हैं, वहीं इजरायल को स्वतंत्र फिलस्तीन देश की राह आसान करनी है। हमास का कहना है कि हथियार तब छोड़े जाएंगे, जब स्वतंत्र फिलस्तीन का रास्ता साफ होगा। इस पर इजरायल तैयार नहीं दिख रहा है। यह ठीक है कि स्वयं की ओर से प्रस्तावित गाजा शांति समझौते पर अमल शुरू होने के अवसर पर मिस्र जाने के पहले इजरायल पहुंचे अमेरिकी राष्ट्रपति ने अपनी पहल को पश्चिम एशिया में शांति की स्थापना का पथ करार दिया और इजरायली प्रधानमंत्री से ईरान से समझौता करने को कहा। ऐसे किसी समझौते की सूरत तब बनेगी, जब ईरान इजरायल को मिटाने की अपनी जिद छोड़ेगा।

गाजा की वर्तमान स्थिति किसी एक राष्ट्र या एक नीति की देन नहीं है; यह दशकों से चली आ रही अविश्वास, असमानता और राजनीतिक स्वार्थों की परिणति है। इस बार के संघर्ष ने जिस तरह से निर्दोष नागरिकों, बच्चों और महिलाओं को अपना शिकार बनाया, उसने यह स्पष्ट कर दिया कि युद्ध चाहे किसी भी नाम पर लड़ा जाए, उसका परिणाम हमेशा मानवीय त्रासदी ही होता है। अस्पताल, विद्यालय, धार्मिक स्थल-कोई भी स्थान सुरक्षित नहीं रहा। अमेरिकी मध्यस्थता वाले युद्धविराम समझौते के बाद हमास ने आखिरकार शेष जीवित बचे बीस इस्राइली बंधकों को रिहा कर दिया। जिसके बाद इस्राइल में किसी बड़े उत्सव जैसा जश्न दिखा। बहरहाल, इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि अभी भी इस्राइल-हमास जोखिमभरा युद्धविराम समझौता नाजुक बना हुआ है। इसकी वास्तविक परीक्षा आने वाले दिनों में होगी। इस संघर्षरत क्षेत्र में स्थायी शांति सुनिश्चित करने के लिये जरूरी है कि प्रमुख हितधारकों की ओर से गंभीर एवं ईमानदार प्रयास लगातार होते रहें। वर्तमान समय में सबसे बड़ी चुनौती भूतहा खण्डहर एवं तबाही में तब्दील हो चुके गाजा के पुनर्निर्माण की होगी। दो साल से लगातार जारी युद्ध के चलते यह इलाका मलबे के ढेर में तब्दील हो चुका है।

एक नाजुक समय में जब युद्धविराम की घोषणा हुई, तो यह केवल एक राजनीतिक निर्णय नहीं है, बल्कि मानवीय विवेक का पुनर्जागरण भी है। यह समझना आवश्यक है कि शांति कोई समझौता नहीं, बल्कि एक अनिवार्य आवश्यकता है। यही कारण है कि यह युद्धविराम पूरी मानवता के लिए एक ह्यआशा की किरणह्ल बनकर उभरा है। यह उस संभावना का प्रतीक है कि जब दुनिया के शक्तिशाली देश, विशेषकर अमेरिका, यूरोप, और अरब राष्ट्र अपनी राजनीतिक प्राथमिकताओं से ऊपर उठकर मानवीय सरोकारों को महत्व देते हैं, तो समाधान की दिशा में रास्ता बनता है। फिर भी इस शांति की वास्तविकता पर प्रश्नचिह्न बने हुए हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भले ही इस युद्धविराम को अपने कूटनीतिक प्रयासों की उपलब्धि के रूप में प्रस्तुत किया हो, पर सच यह है कि युद्ध तब रुका जब उसकी भयावहता अपनी चरम सीमा पर पहुँच चुकी थी। यह विराम किसी की ह्लकूटनीति की जीतह्ल से अधिक, मानवीय विवशता की उपज है। अंतरराष्ट्रीय दबाव, मानवीय संगठनों की सक्रियता और आम नागरिकों की पुकार ने मिलकर इस विराम को संभव बनाया। अब सबसे बड़ी चुनौती यह है कि यह शांति टिके, युद्ध का अंधेरा नहीं, शांति का उजाला फैले। क्योंकि जब तक गाजा के लोगों को जीवन की मूलभूत सुविधाएँ-पानी, भोजन, दवा, शिक्षा और सम्मानजनक जीवन नहीं मिलते, तब तक शांति केवल कागजों पर दर्ज रहेगी। वास्तविक शांति केवल तब संभव है जब अन्याय, दमन और असमानता के ढाँचे टूटें। शांति का अर्थ केवल हथियारों का मौन नहीं, बल्कि हृदयों का परिवर्तन है।

अमेरिकी राष्ट्रपति ने इजरायली संसद को संबोधित करते हुए गाजा शांति समझौते को पश्चिम एशिया की ऐतिहासिक सुबह की संज्ञा दी। वे कुछ भी दावा करें, फिलहाल यह कहना कठिन है कि प्रमुख मुस्लिम देश इजरायल को मान्यता देने के लिए तैयार होंगे। भले ही ट्रंप यह कह रहे हों कि गाजा शांति समझौते को सभी मुस्लिम देशों का समर्थन मिला, लेकिन वस्तुस्थिति इससे अलग है। जब यह समझौता सामने आया था, तब उसे समर्थन देने और ट्रंप की प्रशंसा करने वालों में पाकिस्तान भी था, पर अब वह इस समझौते को समर्थन देने से केवल पीछे ही नहीं हट गया, बल्कि उसने अपने यहां ऐसा माहौल बनाया कि उसके विरोध में कट्टरपंथी तत्व सड़क पर उतर आए। यह मानने के अच्छे-भले कारण हैं कि पाकिस्तान ने गाजा शांति समझौते को नकारने के लिए ही कट्टरपंथी तत्वों को सड़कों पर उतरने के लिए उकसाया और फिर उन पर गोलियां भी चलवाईं, ताकि दुनिया और विशेष रूप से अमेरिका को यह संदेश जाए कि उसके लिए गाजा शांति समझौते को स्वीकार करना संभव नहीं। यहां अमेरिका को पाक के दोहरे चरित्र को समझ लेना चाहिए।

संयुक्त राष्ट्र, यूरोपीय संघ, अरब लीग और विश्व की सभी बड़ी शक्तियों की जिम्मेदारी है कि वे इस युद्धविराम को केवल घोषणा भर न रहने दें। उसे स्थायी बनाने के लिए एक ठोस मानवीय पुनर्निर्माण योजना तैयार की जाए, जिसमें राजनीतिक समाधान, मानवीय सहायता और संवाद-तीनों को समान महत्व मिले। गाजा के बच्चे जब फिर से स्कूलों में लौटेंगे, जब शरणार्थी अपने घरों में बस सकेंगे, जब भय की जगह भरोसा जन्म लेगा, तभी यह कहा जा सकेगा कि गाजा में शांति आई है।

इजरायल को यहां ज्यादा उदारता का परिचय देना होगा, क्योंकि इसमें कोई संदेह नहीं है कि वह बहुत ताकतवर है। हमास को भी हिंसा से बचना चाहिए। द्वि-राष्ट्रीय व्यवस्था को जमीन पर ठीक से साकार करना हमास का लक्ष्य होना चाहिए।

हमास को अपनी छवि सुधारने की चिंता करनी चाहिए, अगर उस पर यकीन किया गया है, तो उसे खरा उतरना होगा। गाजा में किसी भी सूरत में हिंसा की वापसी नहीं होनी चाहिए।

आज यह युद्धविराम भले ही ह्यएक आशा की किरणह्ल बना हो, परंतु उसे स्थायी प्रकाश में बदलना विश्व समुदाय के विवेक, संवेदनशीलता और सतत प्रयास पर निर्भर करता है।

घूँघट की बगावत

19 अक्टूबर 2025

प्रत्येक रविवार को प्रकाशित
हिन्दी साप्ताहिक समाचार पत्र

▶ डीडीएलजे के तीस वर्ष पूरे होने से पहले काजोल का बेबाक बयान

दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे का वो जादू नहीं मिलेगा

यदि डीडीएलजे का रीमेक बनाना हो तो आपको उसे डीडीएलजे जैसा बनाना होगा, लेकिन वह कभी डीडीएलजे जैसी नहीं बन सकेगी।

अभिनेत्री काजोल का मानना है कि 30 साल पहले जबरदस्त लोकप्रियता हासिल करने वाली फिल्म दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे (डीडीएलजे) का यदि रीमेक बनाया गया तो उसे आज के दौर और सोच के अनुसार ढालना होगा, इसलिए उसका पहले जैसा जादू फिर से पैदा करना संभव नहीं है। प्रेम कहानी डीडीएलजे 20 अक्टूबर, 1995 को रिलीज हुई थी जिसमें काजोल ने सिमरन और शाहरुख खान ने उनके प्रेमी राज का किरदार निभाया था। यह फिल्म भारत की अब तक की सर्वाधिक सफल फिल्मों में से एक मानी जाती है और इसे आज भी मुंबई के मराठा मंदिर में बड़े पर्दे पर देखा जा सकता है। इस फिल्म के 30 साल पूरे होने से पहले काजोल ने ,एक साक्षात्कार के दौरान कहा, अपना खुद का जादू पैदा कीजिए। ...मुझे नहीं लगता कि वह जादू फिर से पैदा किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि यदि डीडीएलजे का रीमेक बनाना हो तो आपको उसे डीडीएलजे जैसा बनाना होगा, लेकिन वह कभी डीडीएलजे जैसी नहीं बन सकेगी। उसे अलग होना होगा और जब आप एक बार लोगों और माहौल को बदल देते हैं तो आपको कहानी को वर्तमान समय, समाज और सोच के अनुसार ढालना होगा। काजोल ने कहा, इससे फिल्म का पूरा अंदाज बदल जाता है। इसलिए आपको अपना जादू खुद पैदा करना होगा। यह चर्चा का विषय है कि आज के युवाओं को यह फिल्म कितनी पसंद आएगी। इस फिल्म ने दो प्रवासी भारतीय युवाओं की कहानी के जरिए बॉलीवुड रोमांस को एक नयी परिदी और आज भी इसके लाखों प्रशंसक हैं। 'तुझे देखा तो ये जाना सनम', 'मेहंदी लगा के रखना', 'रुक जा...', 'मेरे ख्वाबो में...' और 'हो गया है तुझको तो प्यार सजना' जैसे इसके गीत तथा 'बड़े बड़े देशों में...', 'पलट' और 'जा सिमरन जा' जैसे इसके संवाद आज भी लोकप्रिय हैं। उन्होंने कहा, मुझे नहीं लगता कि परफेक्ट फिल्म जैसी कोई चीज होती है और मुझे नहीं लगता कि हमें पता था कि एक ह्यपरफेक्ट फिल्मह्ल क्या होती है... लेकिन हां, यह एक ऐसी फिल्म है जो अब भी अच्छा प्रदर्शन कर रही है। आप जानते हैं कि डीडीएलजे को 30 साल होने वाले हैं। यह अद्भुत है। मुझे लगता है कि लोगों ने इसे अपनाया और इसे अपना बना लिया।

भाजपा के स्टार प्रचारकों की सूची घोषित

पटना। आगामी विधानसभा चुनाव प्रचार के लिए भाजपा ने 40 स्टार प्रचारकों की सूची घोषित कर दी है। पार्टी ने सूची में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह एवं केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के साथ ही केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी का नाम पांच शीर्ष प्रमुख नेताओं में सम्मिलित किया है।

शिवराज सिंह चौहान, बिहार के चुनाव प्रभारी एवं केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान, गिरिराज सिंह एवं योग आदित्य नाथ एवं महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडनवीस को दस शीर्ष स्टार प्रचारकों की सूची में रखा है। इसके अतिरिक्त असम के मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा, मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव, दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता, स्मृति ईरानी के अतिरिक्त उत्तर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य का नाम शीर्ष 15 स्टार प्रचारक में है।

इसी प्रकार से बिहार के सह प्रभारी एवं केंद्रीय मंत्री सीआर पाटिल, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष दिलीप जायसवाल, उप मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी एवं विजय सिन्हा के अतिरिक्त पूर्व उप मुख्यमंत्री रेणी देवी, मंत्री प्रेम कुमार, केंद्रीय गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय, पूर्व भाजपा प्रदेश अध्यक्ष राधा मोहन सिंह, साध्वी निरंजन ज्योति, केंद्रीय राज्य मंत्री सतीश चंद्र दुबे, राजभूषण चौधरी, पूर्व केंद्रीय मंत्री अश्विनी चौबे, रविशंकर प्रसाद, नंद किशोर यादव, राजीव प्रताप रूढ़ी, पूर्व भाजपा प्रदेश अध्यक्ष संजय जायसवाल, बिहार प्रभारी विनोद तावड़े, झारंखड भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी, सांसद प्रदीप सिंह, गोपालजी ठाकुर, मंत्री जनक राम, भोजपुरी गायक एवं अभिनेता पवन सिंह गोरखपुर के सांसद रवि किशन एवं दिनेश लाल यादव निरहुआ नाम भी स्टार प्रचारक की सूची में है।

▶ श्रम विभाग की व्यापक पहल

उत्तर प्रदेश को वर्ष 2027 तक बालश्रम मुक्त बनाने का लिया संकल्प

देवरिया । उत्तर प्रदेश शासन ने प्रदेश को वर्ष 2027 तक पूर्णतः बाल श्रम मुक्त बनाने का संकल्प लिया है। इस क्रम में सहायक श्रम आयुक्त स्कन्द कुमार ने जानकारी दी कि अब बाल श्रमिकों को न केवल श्रम से मुक्त कराया जाएगा, बल्कि उन्हें शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ा जाएगा तथा उनके शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास हेतु विभिन्न योजनाओं से आच्छादित किया जाएगा। साथ ही, उनके परिवारों को कौशल विकास प्रशिक्षण (स्किल डेवलपमेंट) के माध्यम से आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाया जाएगा। सहायक श्रम आयुक्त ने जनपद के समस्त नागरिकों, व्यापारियों, दुकानदारों, प्रतिष्ठान स्वामियों एवं फैक्ट्री मालिकों से स्पष्ट अपील की कि 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों से किसी भी प्रकार का कार्य न कराया जाए। साथ ही 14 से 18 वर्ष के किश-ोरों को किसी भी खतरनाक कार्य अथवा प्रक्रिया में नियोजित न किया जाए।

उन्होंने चेतावनी दी कि बाल श्रम कराना एक गंभीर एवं दण्डनीय अपराध है। इसके लिए 6 माह से 2 वर्ष तक का कारावास अथवा 20 से 50हजार रुपए तक का जुर्माना या दोनों दंड दिए जा सकते हैं। पुनः अपराध करने वालों पर और कठोर कार्रवाई की जाएगी। श्रम विभाग ने आम नागरिकों से भी सहयोग की अपील की है कि यदि कहीं बाल श्रम कराया जा रहा हो तो उसकी सूचना तत्काल श्रम विभाग, विकास भवन परिसर देवरिया, जिला टास्क फोर्स या चाइल्डलाइन हेल्प नंबर 1098 पर दी जा सकती है। सहायक श्रम आयुक्त स्कन्द कुमार ने कहा जनपद को बाल श्रम मुक्त बनाने में समाज के हर वर्ग की सहभागिता आवश्यक है। यदि हम सभी मिलकर प्रयास करें, तो वर्ष 2027 तक देवरिया को बाल श्रम मुक्त जिला बनाना संभव होगा। प्रत्येक बच्चे को शिक्षा, सुरक्षित बचपन और उज्ज्वल भविष्य का अधिकार दिलाना ही वास्तविक राष्ट्र निर्माण है।

निमोनिया ने ली डायने कीटन की जान

डायने कीटन के परिवार ने अभिनेत्री की मृत्यु के कारण का खुलासा करते हुए कहा कि 'एनी हॉल' स्टार का 11 अक्टूबर को निमोनिया के कारण निधन हो गया। पीपल पत्रिका को दिए एक विशेष बयान में, ऑस्कर विजेता अभिनेत्री के परिवार ने पुष्टि की कि 11 अक्टूबर को निमोनिया के कारण उनकी मृत्यु हो गई और उनके प्रति उमड़े समर्थन के लिए आभार व्यक्त किया। कीटन के परिवार ने पीपल पत्रिका को दिए एक बयान में यह खबर साझा की और कहा कि वे हाल के दिनों में मिले व्यापक समर्थन संदेशों के लिए आभारी हैं। उनके परिवार ने कहा, कीटन परिवार अपनी प्यारी डायने, जिनका गत दिनों 11 अक्टूबर को निमोनिया से निधन हो गया था, की ओर से पिछले कुछ दिनों में मिले प्यार और समर्थन के असाधारण संदेशों के लिए बहुत आभारी है। कीटन का जन्म 1946 में लॉस एंजिल्स में हुआ था और वे पर्दे पर अपनी ईमानदारी और मौलिकता के लिए जानी जाती थीं। उन्हें 'द फर्स्ट वाइव्स क्लब', 'समथिंग्स गॉट्टा गिव' और 'बेबी बूम' जैसी फिल्मों में उनकी भूमिकाओं के लिए सराहा गया। कई लोगों ने उनकी स्वतंत्रता और प्रामाणिकता की प्रशंसा की, जिनके गुणों ने वर्षों से दर्शकों को प्रेरित किया है। उनकी करुणा को याद करते हुए, कीटन के परिवार ने पशु कल्याण और बेघर समुदाय के समर्थन के प्रति उनके समर्पण का उल्लेख किया। उन्होंने कहा, ₹वह अपने जानवरों से बहुत प्यार करती थीं और बेघर समुदाय के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता थी, इसलिए उनकी स्मृति में किसी स्थानीय खाद्य बैंक या पशु आश्रय में किया गया कोई भी दान उनके लिए एक अद्भुत और अत्यंत सराहनीय श्रद्धांजलि होगी।

मैं बिहार की जनता से सीधा संवाद करूंगा, क्योंकि जनता ही हमारी ताकत: सांसद रविकिशन

▶ रविकिशन शुक्ला बिहार विधानसभा चुनाव के लिए स्टार प्रचारक घोषित

गोरखपुर। गोरखपुर के लोकप्रिय सांसद, फिल्म अभिनेता और जनप्रिय नेता रवि किशन शुक्ला को भारतीय जनता पार्टी द्वारा बिहार विधानसभा चुनाव के लिए स्टार प्रचारक घोषित किया गया है। पार्टी के इस निर्णय का स्वागत करते हुए रवि किशन ने कहा कि वे बिहार की धरती पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के विकसित भारत–समृद्ध बिहार के संकल्प को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य करेंगे। सांसद रवि किशन शुक्ला ने कहा– बिहार मेरा अपना है, मेरी मिट्टी है। आज बिहार विकास, रोजगार, शिक्षा और आत्मनिर्भरता के नए युग की ओर बढ़ रहा है। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भारत ने जो प्रगति का मार्ग अपनाया है, उसी राह पर बिहार को और आगे ले जाना ही मेरा संकल्प है।उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी की नीतियाँ सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास के मूलमंत्र पर आधारित हैं। बिहार के युवा, किसान, महिलाएँ और व्यापारी आज मोदी सरकार की योजनाओं का लाभ उठा रहे हैं, जिस–ासे राज्य के विकास की रफ्तार तेज हुई है। रवि किशन शुक्ला ने कहा कि वे चुनावी प्रचार के दौरान गांव-गांव, शहर-शहर जाकर भाजपा की जनकल्याणकारी योजनाओं और प्रधानमंत्री मोदी जी के विकसित भारत 2047 के दृष्टिकोण को जनता के बीच रखेंगे।

बिहार की जनता विकास चाहती है, स्थिरता चाहती है, रोजगार और सम्मान चाहती है और भाजपा उसी का प्रतीक है। मैं बिहार की जनता से सीधा संवाद करूंगा, क्योंकि जनता ही हमारी ताकत है। सांसद रवि किशन शुक्ला ने कहा कि वे प्रचार के दौरान बिहार के युवाओं को यह संदेश देंगे कि– फिट युवा ही बनेगा विकसित भारत का आधार, और आत्मनिर्भर बिहार उसका सशक्त स्तंभ।

एक समृद्ध और गहन अनुभवसे युक्त कंतारा : अ लीजेंड-चैप्टर 1

कंतारा : अ लीजेंड-चैप्टर 1 सचमुच एक महत्वाकांक्षी और दृश्यात्मक रूप से अद्भुत फिल्म है, जिसे ऋषभ शेट्टी के शानदार और सशक्त अभिनय ने गढ़ा है। फिल्म की तकनीकी उपलब्धियाँ और इसके मुख्य अभिनेता का अभिनय कौशल निर्विवाद है, लेकिन एक कमजोर क्लाइमेक्स और धीमी शुरूआत इसे पूर्णता से वंचित कर देती है। ऋषभ शेट्टी की कंतारा चैप्टर 1 बॉक्स ऑफिस पर हर दिन शानदार कमाई कर रही है। हर तरफ से फिल्म को भरपूर प्यार मिल रहा है। ऋषभ शेट्टी की फिल्म की लोग जमकर तारीफ कर रहे हैं साथ ही इनकी एक्टिंग सबसे ज्यादा चर्चा का विषय बनी हुई है। फिल्म को लेकर लोगों के अलग अलग रिएक्शन भी सामने आयी है। ऋषभ शेट्टी द्वारा निर्देशित इस फिल्म में रुक्मिणी वसंत, गुलशन देवैया और जयराम भी मुख्य भूमिकाओं में हैं। 2022 की ब्लॉकबस्टर फिल्म कंतारा के प्रीक्वल के रूप में, यह फिल्म बूटा कोला अनुष्ठान की प्राचीन जड़ों की पड़ताल करती है और पहली किस्त में बताई गई कथाओं और पौराणिक कथाओं का विस्तार करती है।

यह चौथी शताब्दी ईस्वी में स्थापित है और कंतारा की रहस्यमयी भूमि की पवित्र उत्पत्ति को उजागर करती है। फिल्म को अपने अभिनय, प्रभावशाली वीएफएक्स और सम्मोहक कहानी के लिए सराहना मिल रही है। फिल्म को संदीप रेड्डी वांगा, राम गोपाल वर्मा और अनुपम खेर के साथ-साथ क्रिकेटर केएल राहुल और अभिनेता सुनील शेट्टी सहित उद्योग के अंदरूनी लोगों से सराहना मिली है। उम्मीद है कि यह फिल्म जल्द ही भारत में ₹400 करोड़ क्लब में शामिल हो जाएगी। घरेलू टिकट खिड़की पर 13 दिनों के बाद, इस पौराणिक एक्शन ड्रामा ने 465.25 करोड़ रुपये की कमाई की, और दूसरे मंगलवार को 13.50 करोड़ रुपये की कमाई के साथ एक अच्छा रिकॉर्ड बनाया। यह फिल्म 2 अक्टूबर को रिलीज हुई थी। आइये जानते है फिल्म के बारे में जिसकी वजह से यह फिल्म चर्चा का विषय है। बहुत कम ही ऐसी फिल्म सिनेमाघरों में आती है जो सिर्फ.एक कहानी नहीं कहती, बल्कि समय से परे जाकर एक अनुभव बन जाती है। कंतारा: अ लीजेंड - चैप्टर 1 ऐसी ही एक फिल्म है। यह नई किस्त उस जादुई लोककथा की जड़ों की ओर लौटती है जिसका अनुभव 2022 में ब्लॉकबस्टर 'कंटारा' के साथ हुआ था। हालाँकि, यह सीक्वल नहीं, बल्कि एक प्रीक्वल है, जो बताता है कि सब कुछ कैसे शुरू हुआ। तो चलिए पंजुरली की दुनिया में गहराई से उतरते हैं।

कहानी

यह कहानी हमें प्राचीन कदंब राजवंश के समय में ले जाती है, जहाँ एक निर्दयी राजा, सत्ता के नशे में चूर, अपने स्वार्थ में अंधा हो जाता है। उसका लालच उसे एक रहस्यमय बूढ़े व्यक्ति के पास ले जाता है जिसके पास अनगिनत अनमोल खजाने हैं। इन खजानों की खोज में, राजा की नजर उस जगह पर पड़ती है जिसे हम 'कंटारा' के नाम से जानते हैं, एक पवित्र और शांत भूमि जहाँ जनजातियाँ प्रकृति के साथ पूर्ण सामंजस्य में रहती हैं। लेकिन यह कोई साधारण भूमि नहीं है; यह देवताओं द्वारा संरक्षित एक स्थान है। जैसे-जैसे राजा का इस भूमि पर कब्जा करने का इरादा बढ़ता है, प्रकृति अपना प्रकोप प्रकट करने लगती है। जैसे ही भांगड़ा साम्राज्य के राजा विजयेंद्र (जयराम), उनके निर्दयी पुत्र कुलशेखर (गुलशन देवैया) और दयालु पुत्री कनकवती (रुक्मिणी वसंत) कहानी में प्रवेश करते हैं, घटनाएँ और जटिल हो जाती हैं। इस संघर्ष में एक प्रमुख व्यक्ति उभर कर आता है: कंतारा का रक्षक, बरमे (ऋषभ शेट्टी), जो न केवल एक नेता है, बल्कि अपनी भूमि और अपने लोगों में अटूट विश्वास का प्रतीक भी है। जब कंतारा के निवासी भांगड़ा के क्षेत्र में प्रवेश करते हैं, तो टकराव अपरिहार्य हो जाता है। इसके परिणामस्वरूप केवल एक युद्ध नहीं, बल्कि संस्कृति, आस्था और अस्तित्व का संघर्ष होता है।

अभिनय

जयराम अपने किरदार को इतनी गंभीरता और गरिमा के साथ निभाते हैं कि वे सहजता से कहानी का भार अपने कंधों पर उठा लेते हैं। गुलशन देवैया ने कुलशेखर के रूप में इतना घिनौना अभिनय किया है कि दर्शक उनके किरदार से घृणा करने लगेंगे और यही एक सच्चे कलाकार की जीत है। ऋषभ शेट्टी, न केवल मुख्य अभिनेता, बल्कि लेखक और निर्देशक भी, हर स्तर पर फिल्म की धड़कन साबित होते हैं। उनका समाधिस्थ होना, 'गुलिगा' वाला दृश्य और चरमोत्कर्ष, ये सभी सिनेमा के जादुई क्षण हैं जो आपको अंदर तक झकझोर देंगे।

तकनीकी पक्ष

फिल्म तकनीकी रूप से बहुत समृद्ध है। अरविंद एस. कश्यप की सिनेमैटोग्राफी दर्शकों को कंतारा की रहस्यमयी और आध्यात्मिक दुनिया में डुबो देती है। अजनीश लोकनाथ का बैकग्राउंड स्कोर माहौल को जीवंत कर देता है, हालाँकि गानों में वह गहराई नहीं है जो पहली फिल्म में थी, खासकर 'वराह रूपम' का प्रभाव। सुरेश का संपादन सराहनीय है, हालाँकि कुछ दृश्य, जैसे जेल वाला दृश्य और बाघ से टकराव से पहले के क्षण, और भी सटीक हो सकते थे। धीमी शुरूआत के बाद, कंतारा: अ लीजेंड - चैप्टर 1 न केवल आँखों को सुकून देती है, बल्कि गहराई से डूबने पर भी मजबूर कर देती है। फिल्म की धीमी गति और कुछ हास्यपूर्ण दृश्य कुछ दर्शकों को अरुचिकर लग सकते हैं, लेकिन इसका क्लाइमेक्स, इसकी भावनाएँ और इसकी तकनीकी सरलता इसे अंततः एक यादगार अनुभव बनाती है। कंतारा: अ लीजेंड - चैप्टर 1 एक ऐसा अनुभव है जो लोककथाओं, मिथकों और मानवीय मूल्यों की गहराई में उतरने की क्षमता रखती है।

मिस्र के विदेश मंत्री ने मोदी से की मुलाकात

नयी दिल्ली। भारत यात्रा पर आये मिस्र के विदेश मंत्री डॉ. बद्र अब्देलती ने गत शुक्रवार को यहां प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की। प्रधानमंत्री ने गाजा शांति समझौते में मिस्र की महत्वपूर्ण भूमिका के लिए राष्ट्रपति सिसी को हार्दिक बधाई दी और आशा व्यक्त की कि इससे क्षेत्र में स्थायी शांति स्थापित होगी। विदेश मंत्री अब्देलती ने प्रधानमंत्री को उनकी यात्रा के दौरान आयोजित पहली भारत-मिस्र रणनीतिक वार्ता के बारे में जानकारी दी। श्री मोदी ने व्यापार, प्रौद्योगिकी, ऊर्जा, रक्षा और लोगों के बीच संबंधों सहित द्विपक्षीय सहयोग के विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति पर संतोष व्यक्त किया।

स्वामी/मुद्रक/प्रकाशक पंकज धर द्विवेदी द्वारा जनप्रकाशन प्रेस निकट रीड्स साहब का धर्मशाला से मुद्रित एवं 45, बादशाह बाग, जगन्नाथपुर, गोरखपुर से प्रकाशित।

संपादक: पंकज धर द्विवेदी

संपर्क सूत्र : ghoonghatkibagawat37@gmail.com